 ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

पोष-माघ, संवत् नानकशाही ५४७

वर्ष ९ अंक ५ जनवरी **2016**

संपादक : सिमरजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**



फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥ सो कंमु सुहेला जो तेरी घाली ॥
सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूं वुठा सभना के दातारा जीउ ॥१॥
तूं सांझा साहिबु बापु हमारा ॥ नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥
जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥२॥
सभु को आसै तेरी बैठा ॥ घट घट अंतरि तूं है वुठा ॥
सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥३॥
तूं आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥ तूं आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥
नानक दास तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥४॥ *(पन्ना ९७)*

माझ राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी परमात्मा के गुणों का बखान करते हुए उसकी प्रशंसा करते हैं कि हे परमात्मा! मुझे वो समय सबसे सुखदायी लगता है जब मैं तुम्हें अपने हृदय में बसाता हूं अर्थात् तुम्हें अपने हृदय में बसा हुआ अनुभव करता हूं। मुझे वही काम शोभनीय लगता है जिसे मैं (तुम्हारी) सेवा समझकर करता हूं। जिस हृदय में तुम्हारा निवास है वो सदा शीतल रहता है अर्थात् वो हृदय सदा प्रेम-विगलित रहता है। हे परमात्मा! तुम सब जीवों को बख़्शिशें प्रदान करने वाले हो अर्थात् सबके पिता हो। जगत के जो नौ ख़ज़ाने हैं, नौ निधियां हैं वो सब तुम्हारे अधिकार में हैं, उनमें कभी कमी नहीं आती। जिसे तुम अपनी नाम-रूपी बख़्शिश प्रदान करते हो अर्थात् जिसे तुम संतुष्टि प्रदान करते हो वही तृप्त हो जाते हैं और वही तुम्हारे भक्त (गुरमुख) हैं।

आगे की पंक्तियों में गुरु जी का फरमान है कि हे परमात्मा! सबको तेरे से ही आशा है कि तुम ही बख़्शिशें प्रदान करने वाले हो। सबके हृदय-घर में तुम ही निवास करते हो। सारे जीव तुम्हारे साथ सांझ रखने वाले कहलवाते हैं, कोई भी जीव ऐसा नहीं जिसके साथ तुम्हारी सांझ न हो अर्थात् सारे जीव तुम्हारे ही नियंत्रण में हैं। हे परमात्मा! तुम खुद जीवों (गुरमुखों) को अपनी शरण प्रदान करके जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त कर देते हो तथा खुद ही जीवों (मनमुखों) को जन्म-मरण के चक्कर में डाल देते हो। हे प्रभु! यह जगत-रचना सब तुम्हारे द्वारा सृजित की गई है इसलिए मैं तुम पर से कुर्बान जाता हूं अर्थात् तुम्हारे द्वारा इस महान जगत-रचना तथा जीवों के पालन-पोषण करने के समक्ष मैं नत्मस्तक हूं।





आओ! दशम गुरु जी के पावन प्रकाश पर्व पर परतंत्रता-स्वतंत्रता की ऐतिहासिक और वर्तमान स्थिति पर विचार करें!

मनुष्य-मात्र सदैव ही अपने आप को स्वतंत्रता के वातावरण में पाकर ही आत्म-संतुष्टि तथा खुशी महसूस करता है। परतंत्रता या गुलामी में साधारण मनुष्य बहुत घुटन महसूस करता है। साधारण मनुष्य का अब तक का इतिहास वस्तुत: परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ने के प्रयासों का ही विवरण है। भारतवर्ष में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा और भी अनेकों प्रकार की गुलामी का अनचाहा सिलसिला न केवल सदियों से बल्कि हज़ारों वर्षों से चलता आ रहा है। इसी अनचाहे सिलसिले को हटाने हेतु और जन-साधारण को सुख-चैन का जीवन उपलब्ध कराने हेतु मध्य युग की पंद्रहवीं सदी में श्री गुरु नानक देव जी महाराज का आगमन हुआ। गुरु जी के आगमन से पूर्व देश का जन-साधारण परतंत्रता को अपनी तकदीर मान चुका था। वह गुलामी की जंज़ीरों में बंधा हुआ चुपचाप दिन पूरे करने की जीवन-विधि को अपना चुका था। गुरु जी के आगमन से, उसके द्वारा जन-साधारण का परतंत्रता से स्वतंत्रता की दिशा में कदम बढ़ाने का सदियों से रुका हुआ मानवीय कर्म फिर से आरंभ हुआ। गुरु महाराज ने जन-साधारण को मानवीय स्वतंत्रता का संकल्प देकर इसको हर सूरते-हाल में कायम रखने और इसे उच्चतम विकास-विगास की शिखर तक पहुंचाने हेतु अपनी पावन ज्योति का संचार भाई लहिणा जी में करके उनको श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में गुरगद्दी पर स्थापित किया। इससे दस सिक्ख गुरु साहिबान की विस्मयजनक गौरवशाली परंपरा का विकास हुआ। दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज इस परंपरा का शिखर हमारे दृष्टिगोचर करते हैं। जिस मानवीय स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने हेतु प्रत्येक गुरु साहिब अपने-अपने गुरगद्दी काल में प्रत्येक संभव प्रयत्न करते रहे उसका पूर्णत: स्थापन जन-साधारण ने दशम गुरु जी के गुरगद्दी काल में १६९९ ई को खालसा की सृजना की ऐतिहासिक घटना के रूप में घटित हुए साके में न केवल अपनी आंखों से देखा बल्कि उसकी तो सृजना ही सक्षम सतिगुरु जी ने जन-साधारण में से की थी। अत: दशम गुरु जी के समय में जन-साधारण को न केवल बहुपक्षीय परतंत्रता से ही मुक्ति प्राप्त हुई बल्कि सतिगुरु जी की अपार कृपा-दृष्टि से उसने स्वतंत्रता के भरपूर आनंद का व्यवहारिक अनुभव भी किया। जन-साधारण के गुलामी के सभी बंधन पूर्णत: कट गए--जात-पात तथा छूत-छात के बंधन, विदेशी शासकों-प्रशासकों के जुल्मो-जब्र को चुपचाप सहने की विवशता के बंधन, उनके हाथों अपने सम्मान को पूर्णत: बिना किसी रोष की अभिव्यक्ति के स्वीकार करने के बंधन, अपनी कमाई उनको सौंप देने की मज़बूरी के बंधन, उनकी विदेशी तर्ज की जीवन-शैली, उनकी संस्कृति, अपनी मातृभाषा को पूर्णत: नकार देने की स्थिति के बंधन, धर्म के नाम पर कर्मकांडों के बंधन,

अछूत तथा शूद्र कहलवाने के बंधन तथा और भी अनेकों प्रकार के बंधन। दस गुरु साहिबान की आदर्श अगुआई में जब जन-साधारण को अपनी अनेकों प्रकार की परतंत्रता का ज्ञान अनुभव हुआ तो दशम गुरु जी के नेतृत्व में वे इसको तोड़ देने के सक्षम हुए।

उपयुर्क्त वर्णन की गयी सूरते-हाल में दशम गुरु जी का, नवम् सतिगुरु श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज के गृह में माता गुजरी जी की पावन कोख से मातलोक में प्रकाश होने का दिन समस्त हिंदोस्तान के जन-साधारण के लिए विशेष सौभाग्यपूर्ण दिवस था। गुरु जी के प्रकट होने से ही जन-साधारण सभी प्रकार के बंधनों से मुक्ति पाने में सक्षम हो सका। साईं बुल्ले शाह ने कितना सत्य हमारे दृष्टिगोचर किया है कि यदि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आगमन न होता तो हिंदोस्तान में सभी सुन्नी मुसलमान ही होने थे, अन्य सभी का अस्तित्व खत्म हो जाना था। भाई नंद लाल जी द्वारा गुरु जी को *"हक्क हक्क अंदेश गुर गोबिंद सिंघ--बादशाह दरवेश गुर गोबिंद सिंघ"* कथन करने के पीछे गुरु जी का जन-साधारण को बहुआयामी स्वतंत्रता प्रदान करने का ऐतिहासिक सच झलकता है।

ऐसे सतिगुरों का प्रकाश पर्व मनाते हुए हम सभी देशवासियों को यह आत्म-विश्लेषण अवश्य करना चाहिए कि क्या अब भी हम दशमेश गुरु जी द्वारा बख़्शी स्वतंत्रता को कायम करने में सक्षम हैं? साथ ही यह आत्म-विश्लेषण भी कि क्या हम ही अन्य जन-साधारण की मानवीय स्वतंत्रता में बाधा तो नहीं बने हुए और सर्वोपरि यह गहरा विश्लेषण कि हमारे इर्द-गिर्द का राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक प्रबंध हमारी कौन-कौन-सी स्वतंत्रता को हमसे कैसे-कैसे छीन रहा है और इस दुखदायक स्थिति को रोकने के लिए हमें क्या प्रयत्न, क्या उद्यम करने चाहिए। इस संबंध में गुरबाणी का गहन अध्ययन और इसका तत्वसार स्वयं पर लागू करना सर्वाधिक सहायक सिद्ध हो सकता है। दशम गुरु जी के पावन प्रकाश पर्व पर परतंत्रता-स्वतंत्रता की ऐतिहासिक और वर्तमान स्थिति पर विचार महत्त्वपूर्ण ही नहीं बल्कि परम आवश्यक भी है। 

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का युद्ध-विधान

-डॉ जगजीत कौर*

वाहि उपजिओ चेला मरद का मरदान सदाए।
जिनि सभ प्रिथवी कउ जीत करि नीसान झुलाए।
तब सिंघन कउ बखस करि बहु सुख दिखलाए।
फिर सभ प्रिथवी के ऊपरे हाकम ठहिराए। . .
तब भइओ जगत सभ खालसा मनमुख भरमाए।
इउं उठि भबके बल बीर सिंघ शसत्र झमकाए।
(वार ४१:१९)

"जागे सिंघ बलवंत बीर सभ दुसट खपाए।" दुष्टों को खपाने, उनका समूल नाश करने के उद्देश्य से ही अकाल पुरख वाहिगुरु जी ने इस पुरख मरद अगंमड़ा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को इस भू पर भेजा। दशम गुरुदेव जी ने स्वयं अपने जीवन-उद्देश्य को स्पष्ट किया है :

याही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेहु साधू सभ मन मं ॥
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥४३॥६॥

दुष्टता, अन्याय, असमानता, अनाचार, अत्याचार, शोषण और मानव अधिकारों के हनन का विरोध करके मानव सुख, शांति और स्वतंत्रता के सुख-उपभोग द्वारा जीवन-यापन करे, हलेमी राज्य की स्थापना हो, इसी उपक्रम में गुरुदेव जी ने आततायी दुष्ट सत्ता से टक्कर ली, विजय की दुंदभि बजाते हुए युद्धों का आह्वान किया। यद्यपि इन युद्धों में अनेक प्रिय अलबेले शौर्यपूर्ण सिंघों का बलिदान, अपने लखते-जिगर बड़े साहिबज़ादों का युद्ध-भूमि में बलिदान; अन्य दो नन्हे दुधमुंहे साहिबज़ादों को शत्रुपक्ष की ईर्ष्या का निशाना बन पंथ की बलिवेदी पर कुर्बान होना पड़ा, स्वयं आजीवन कष्ट सहते हुए माछीवाड़े के जंगलों में नंगे पांव भटकना पड़ा, पर *"यारड़े दा सानूं सत्थरु चंगा"* प्रभु-हुक्म स्वीकार कर शत्रु को ऐसा सबक सिखाया कि सदियों तक उसे सिर उठाने लायक नहीं छोड़ा, उसकी जड़ें उखाड़कर ही दम लिया।

विचार करें कि नवोदित सिक्ख पंथ के पास कोई राजसी सत्ता नहीं थी, कोई संगठित सैन्य बल व साधन नहीं थे। श्री गुरु नानक पातशाह जी के जन्म लेने के समय से ही बाबर का आगमन होता है। धीरे-धीरे सिक्ख पंथ के अभ्युदय के साथ ही साथ सुदृढ़ मुगल राज्य की स्थापना होती है, अकबर, जहांगीर औरंगज़ेब दृढ़ शक्तिशाली मुगल सिक्ख पंथ की उन्नति के समानांतर चलते हुए समय-समय पर अवरोध खड़े करते रहते हैं। इधर स्वयं हिंदू पहाड़ी राजा भी शत्रु पक्ष का ही समर्थन करते रहे हैं। ऐसे माहौल में ऐसी कौन सी शक्ति थी जो खालसा को परम शौर्य का प्रदर्शन करते हुए, मुट्ठी भर जवानों को रण-भूमि में जूझने की प्रेरणा देती रही। वे केवल जूझे ही नहीं, अंत विजय भी हासिल की और केसरी निशान बुलंद होते रहे।

*१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो. +९१९४१२४-८०२६६

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा अनेकों युद्ध लड़े गए। सबसे पहला युद्ध पाउंटा साहिब की धरती पर लड़ा गया। भंगाणी का युद्ध, फिर नादौन, हुसैनी का युद्ध और तब अनंदपुर साहिब में पहाड़ी राजाओं के साथ छोटे-मोटे युद्धों में सिंघ स्वयं गुरु जी के नेतृत्व में और साहिबज़ादा अजीत सिंघ के शौर्य-प्रदर्शन से प्रेरित पहाड़ी राजा को हाथ दिखाते रहे, परंतु १७०४ ई में सभी पहाड़ी राजे मुगलों की सम्मिलित सेना सहित अनंदपुर साहिब पर आ चढ़े। तब भी सिंघों के हौसले बुलंद रहे। आठ महीने अनंदपुर साहिब पर घेरा पड़ा रहा। अंत मुगलों और पहाड़ियों की कसमों पर विश्वास कर किला खाली किया गया। विश्वासघाती मुगलों ने सरसा नदी के किनारे घोर शीत की रात्रि में अचानक आ हमला किया। गुरुदेव जी का सारा परिवार बिखर गया। अनेकों सिंघ और माल-असबाब सरसा के बर्फीले जल में बह गया। अंत चमकौर की गढ़ी में केवल ४० सिंघों का शाही सेना के साथ भयानक युद्ध हुआ जिसमें गुरुदेव के बड़े साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ और बाबा जुझार सिंघ शूरवीर गति को प्राप्त हुए। गुरु जी को गढ़ी छोड़नी पड़ी। तब गुरुदेव जी माछीवाड़ा, हेहर, जटपुटा होते हुए रायकोट पहुंचे। यहीं चौधरी रायकल्ला ने नूरे माही सेवक को माताओं और छोटे साहिबज़ादों का समाचार लाने को भेजा, जिसने आकर बताया कि कैसे सरहिंद के नवाब वज़ीर खां ने छोटे साहिबज़ादों को बेरहमी से ज़िंदा दीवार में चिनकर शहीद किया। माता गुजरी जी को ठंडे बुर्ज में रखा और वे भी पंथ पर कुर्बान हो गए। अडोल-चित्त गुरु जी तब रायकल्ला से दीना कांगड़ आ गए। यहां गुरु जी ने एक लंबी चिट्ठी लिखी, जिसे 'जफ़रनामा' (फ़तह का पत्र) कहते हैं। गुरु जी ने इसमें १११ शेअर फारसी में लिखे। यह 'फ़तह का पत्र' भाई दया सिंघ जी के हाथ दक्षिण में स्थित औरंगज़ेब बादशाह को भेजा गया। फ़तह का यह पत्र गुरुदेव जी की अदम्य विजयोत्साह बुलंद मानसिकता और चढ़दी कला का प्रतीक है और प्रत्येक सिक्ख के लिए अद्वितीय प्रेरणा एवं अर्ध्वमुखी मानसिकता बनाए रखने का सुंदर संदेश है।

दीना कांगड़ गुरु साहिब अधिक देर नहीं ठहरे। उन्होंने कोटकपूरा, ढिलवां ठहरते हुए 'खिदराणे की ढाब' पर कैंप लगाया। यह मालवा का क्षेत्र था, जिसके आसपास सारा मरुस्थल था। इसे अपनी गतिविधि का केंद्र बनाया। सरहिंद का नवाब मुगल सेना ले गुरु जी का पीछा करता आ रहा था। गुरु जी ने भी तैयारी शुरू कर दी। अब तक गुरु जी के पास अनेकों मरजीवड़े इकट्ठे हो गए थे। इधर माझा-मालवा के अनेकों सिंघ अमृत-पान कर सिंघ सज चुके थे और पंथ हित कुर्बान होने के जज़्बे से सराबोर थे। यहीं गुरु जी को मालवे के स्वाभिमानी जवानों का विशाल जत्था आ मिला, जिसमें वे चालीस सिंघ भी थे जो श्री अनंदपुर साहिब के घेरे के समय गुरु जी को 'बेदावा' लिखकर दे आए थे; गुरु जी से नाता तोड़ घरों में आ बैठे थे।

इन गुरु से टूटे सिंघों को गुरु-चरणों से जोड़ने की जबरदस्त भूमिका जिस अपूर्व शक्तिशाली, वीर साहसी माता ने निभाई उसका नाम सिक्ख इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। सिक्ख इतिहास को पलटकर रख देने वाली वह अदम्य साहस की अनुकृति हैं-- माता भाग कौर। सिक्ख जगत उनके द्वारा निभाई गई भूमिका को

कभी विस्मृत नहीं कर सकता। माता भाग कौर एक समर्पित गुरसिक्ख परिवार से सम्बंध रखती थीं। श्री गुरु अरजन देव जी से सिक्खी की दात प्राप्त करने वाले भाई लंगाह जी लाहौर से दिल्ली जाने वाली सड़क पर झबाल नामक गांव के ढिल्लों गोत्र के जाट थे। चौधरी लंगाह के भाई पैरोशाह थे; पैरोशाह के पुत्र मालेशाह के घर चार पुत्र और एक पुत्री हुई जो बाल्य-काल से ही अत्यंत सुचेत थी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपनी सुपुत्री बीबी वीरो जी का विवाह इसी गांव झबाल में किया था। परिवार गुरु-संपर्क में रहा। उपरांत श्री गुरु हरिराय साहिब के समय यह बच्ची अभी सात-आठ साल की थी जब इसकी माता इन्हें श्री गुरु हरिराय साहिब के दरबार में लेकर गई। गुरुदेव जी ने सिर पर बख़्शिश भरा हाथ रख आशीर्वाद दिया और कहा कि बच्ची बहुत भाग्यशाली है। तब से नाम 'भागभरी' पड़ा। आस-पास 'भागो' कहने लगा। माता भाग कौर गुरु-चरणों से जुड़ी रहीं। वे श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दरबार में भी रहीं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खालसा पंथ साजना के अवसर पर पूरे परिवार के साथ खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त कर सिंघणी सजीं। सवा छः फुट कद, तेजस्वी मुख-मंडल, भारी भरकम डीलडौल, शस्त्र-संचालन में निपुण, पूरा सेनानी वेश।

अनंदपुर साहिब से बेदावा लिखकर दे आए सिंघ जवान जब घरों में घुस बैठे तो माता भाग कौर जी ने कहा, "कैसे गुरु के सिक्ख हो, कष्ट के समय जब गुरु जी को तुम्हारी जरूरत थी तुम साथ छोड़ चले आए? इन सिंघों को इस प्रेरणा ने उत्साहित किया। वे चलते-चलते खिदराणे की ढाब से पहले ही रामेआणा की सीमा के निकट रुक गए। इन्हें अपनी करनी पर शर्मिंदगी और पश्चाताप हो रहा था। इन्होंने निश्चय किया कि जब तक गुरुदेव खिदराणे की ढाब के ऊपरी टीले पर पक्की मोर्चाबंदी नहीं कर लेते तब तक वे यहीं डटकर मुगल सेना को रोके रखेंगे, उसे गुरु जी तक पहुंचने नहीं देंगे। देखते-देखते माझे-मालवे के और भी शूरवीर सिंघ वहां इकट्ठे हो गए। ढाब के निकट ही इन सिंघों ने वज़ीर खां की चढ़कर आती सेना को ऐसा सबक सिखाया कि वो त्राहि-त्राहि करने लगी। एक-एक सिंघ ने हज़ारों-हज़ारों के सिर काटकर धर दिए। सिंघ अकेला-अकेला ही इतने उत्साह और शौर्य से शस्त्र चला रहा था मानो उसके पीछे फौज की भारी टुकड़ी साथ दे रही हो। सिंघों ने तो गुरु के चरणों पर न्यौछावर हो शहादत पाने की ठान रखी थी। मृत्यु का भय तो तिरोहित हो चुका था। गुरु जी से आशीर्वाद पाने का यही मौका था, अपनी भूल को बख़्शाने का यही अवसर था। बस, उद्देश्य सामने था कि केवल एक गुरु-पंथ के नाम पर शहीद होना है, शहादत का जाम पीकर गुरु की गोद में समाहित होना है। भयानक मार-काट मचती रही। शत्रु लड़ते-लड़ते थक गए। पानी भी नसीब नहीं हो रहा था। उन्हें पानी की ढाब तक पहुंचने ही नहीं दे रहे थे गुरु के सिंघ। गुरु के सिंघ लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। शत्रु थक-हारकर भाग गए। ऊपर से ऊंची टिब्बी पर बैठे दशमेश जी शत्रुओं पर तीरों की बौछार कर रहे थे। साथ ही सिंघों के जूझने का नज़ारा देख रहे थे। युद्ध का नज़ारा अत्यंत भयानक था। 'गुर बिलास पातशाही १०' के कविवर भाई कुइर सिंघ उस युद्ध की भयावहता का ज़िक्र करते हुए कहते हैं,

मानो प्रलय-काल की विभीषिका का हाहाकार मच रहा था। सिंघ भयानक शेरों की भांति गर्जन कर रहे थे। उधर से गुरुदेव बाणों की झड़ी लगा रहे थे, इधर सिंघों की तेगें ऐसे चमक रही थीं मानो आकाश में बिजली चमक रही हो :

महां जंग तिह ठां अब भयो।
हाहाकार चतुर दिस भयो ॥६३॥
दे दे परे सु तुरक नगारे।
केहरि जयों मुकते भभकारे।
भयो जुद्ध अतिसै घन भारो।
प्रलै काल जयों दुती निहारो ॥६४॥
इत मुकतन यों जुद्ध मचायो।
बिसिख चाप प्रभु उत झड़ आयो।
इह बिधि परे अरिन मै बाना।
जिउं नभ बिज्जुल धरन महाना ॥६५॥

(अध्याय १८)

युद्ध समाप्त होने पर विजय की घोषणा के साथ दशमेश पिता टिब्बी पर से नीचे उतरे। वे सोच रहे थे कि ये कौन से शूरवीर योद्धा हैं जो विद्युत-गति से युद्ध कर रहे थे और लड़ते-लड़ते अंत में प्राण न्यौछावर कर गए। गुरु जी ढाब के किनारे मैदान में आए। चारों ओर बिछी लाशों और रक्त की धाराओं का भयावह दृश्य देखा। तब शहीद सिंघों को पहचानने के उद्देश्य से उनके निकट आए, देखा, ये वही मरजीवड़े ४० सिंघ थे जो अनंदपुर साहिब छोड़कर चले आए थे। गुरु जी दयार्द्र हो उठे, हृदय प्रेम विगलित हो उठा। वे उन मृत शरीरों के निकट पहुंचे। एक-एक सिंघ का सिर उठा कर अपनी गोद में रखा, प्यार से उनका लहूलुहान हुआ मुख पोंछा और जान न्यौछावर करने वाले उन सिंघों को सम्मानस्वरूप विशेषण दिया-- "यह मेरा पंज हज़ारी है", "यह मेरा प्यारा दस हजारी है", "यह मेरा बीस हज़ारी है।" इसी तरह उन्हें आशीर्वाद देते हुए हृदय-प्रेम से गद्‌गद् थे गुरु जी, पर नेत्र सजल, अश्रुओं की धार बहती रही। गुरु जी हृदय से अकाल पुरख का शुक्राना कर रहे थे कि "जिस मकसद के लिए *"धरा हम जनमं"* पूर्ण हुआ, खालसा बेखौफ हो चुका है, मौत का डर उसे नहीं रहा, अब वह इसी शमशीर की शक्ति से अन्याय, अनाचार और धक्केशाही का विरोध कर सकेगा, खालसा इतना समर्थ हो चुका है।" ऐसे ही सोचते-विचारते लाशों के ढेर में से चलते जब रुके तो देखा, यह सिंघ तो जत्थेदार है, उन बेदावा लिख दे आए सिंघों का मुखिया भाई महां सिंघ। दृश्य घूम गया नेत्रों में, "न तुम हमारे गुरु, न हम तुम्हारे सिक्ख।" और अब खालसा पंथ की शान हित कुर्बान हुआ पड़ा है। गुरु जी निकट पहुंचे। भाई महां सिंघ की उखड़ी-उखड़ी सांसें चल रही थीं। गुरु जी ने उसका सिर अपनी गोद में रखा, मुंह में पानी की बूंदें डालीं। भाई महां सिंघ की आंखें खुलीं, गुरु जी के दर्शन पा निहाल हुआ। गुरुदेव जी ने प्यार से कहा, "भाई महां सिंघ ! अंतिम मिलन है, कुछ मांग लो।" गुरु जी के दो-तीन बार ऐसा कहने पर भाई महां सिंघ, जिसकी आंखें बेहोशी से कभी खुलती, कभी बंद होती थीं, आखिर साहस बटोरकर कहा, "गुरुदेव, अपने चरणों से जोड़ लो! टूटे हुओं को जोड़ लो गुरुदेव!!" गुरु जी ने वह पत्र जेब से निकाला जिस पर 'बेदावा' लिखा था और भाई महां सिंघ के खुले नेत्रों के सामने ही उसे फाड़ दिया। भाई महां सिंघ को प्यार से गले लगाया। भाई महां सिंघ गुरु जी की गोद में ही परलोक गमन

कर गया। बख़शिंद गुरुदेव जी ने सभी प्यारे सिंघों को चरणों से जोड़ लिया, घोषणा की, "ये चालीस सिंघ मुक्त हुए। आज से ये 'मुकतों' (मुक्तों) के नाम से जाने जायेंगे।" ढाब के किनारे ही सूखी लकड़ियां इकट्ठी की गईं और चिता चुन उन चालीस सिंघों का एक साथ गुरुदेव जी ने अपने हाथों से दाह संस्कार किया। इन महान शहीद चालीस मुकतों की याद में गुरुद्वारा टुट्टी गंडी साहिब, श्री मुकतसर साहिब है। इन्हीं मुकतों के नाम पर 'खिदराणे की ढाब' का नाम 'श्री मुकतसर साहिब' प्रसिद्ध हो गया। इन महान सिंघों को प्रतिदिन अरदास में 'चाली मुकतों' के नाम से याद किया जाता है। माघी के दिन शहीदों के इस तीर्थ-स्थल पर महान सालाना समागम होता है। भाई कुइर सिंघ जी के अनुसार :

तिन को वहै बखस करि दीना।
कागज वहै फाड़ कै दीना।
क्रिपा सिंघ साहिब गुरदेवा।
पै यहि कारज कीन अभेवा।
सब मुकतन इक ठौर करायो।
तिन पर ईंधन अधिक पवायो।
एक शहीद गंज तिह कीनो।
आपन हाथ अनल तिह दीनो।
इह बिध तीरथ थाप कै धर सु महातम चार।
पयान करा महाराज जू सर ते अग्र सुधार।
(अध्याय १६)

इसी मैदान में गुरुदेव जी को माता भाग कौर जी का ज़ख़्मी शरीर बेहोशी में, कराहते हुए मिला। गुरुदेव जी ने उनकी भी मरहम-पट्टी करवाई। वो दर्शन पा निहाल हुई। बाद में वो गुरु जी के साथ दक्षिण तक रही। कर्नाटक के बिदर के जनवाड़ा नामक एक स्थान तक गुरु जी के साथ रही और वहीं परलोक में समाई। जनवाड़ा में उनकी स्मृति में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। यह गुरुद्वारा बिदर की गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंधाधीन है।

इस प्रकार श्री मुकतसर साहिब की जंग जो गुरु जी द्वारा लड़ी गयी, अंतिम जंग थी। उसमें सिंघों को विजय हासिल हुई। गुरु जी द्वारा लड़े गए युद्धों में उनकी जीत का मुख्य कारण गुरुदेव जी की सैन्य-शक्ति और सैन्य-संगठन था। राजनीतिक क्षेत्र में अधिकांश युद्ध अपनी राज्य-सत्ता का दबदबा कायम करने, पैतृक राज्य सीमा को बढ़ाने अथवा दूसरे राज्य का धन-वैभव बटोरने के उद्देश्य से किए जाते हैं, किंतु गुरुदेव जी का इन तीनों में से कोई भी ऐसा उद्देश्य नहीं था। ये युद्ध केवल अन्याय, धक्केशाही और असत्य के विरोध हित किए गए। ज्यादातर युद्ध गुरु जी पर थोपे ही गए। उनकी ख्वाहिश युद्ध करने की कभी नहीं रही, लेकिन *"जबै बाण लाग्यो तबै रोस जाग्यो"* के अनुसार जब आत्म-सम्मान की बात आ बने तो शत्रु को करारे हाथ दिखाना आवश्यक हो जाता है। सीमित साधनों के होते हुए भी यह गुरुदेव जी की सिंघ सैनिकों को दी गई प्रेरणा ही थी, जो उन्हें जूझने को उत्साहित करती रही और *"भई जीत मेरी ॥ क्रिपा काल केरी ॥"* के अनुसार अकाल पुरख वाहिगुरु सिंघों को फ़तहि का आशीर्वाद देते रहे।



भावात्मक एकता से ओत-प्रोत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

पटना-निवास की मधुर स्मृतियां : दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म सन् १६६६ ई. में आधुनिक बिहार प्रदेश की राजधानी 'पटना' में हुआ। उन दिनों नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी पूर्बी भारत के अनेक स्थलों में प्रचार-यात्रा पर थे, जबकि उनकी धर्मपत्नी माता गुजरी जी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। 'बचित्र नाटक' नामक रचना में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर जी की यात्रा के दौरान अपने जन्म का उल्लेख इन शब्दों में किया है :

मुर पित पूरब कीयसि पयाना ॥ भांति भांति के तीरथि नाना ॥
जब ही जात त्रिबेणी भए ॥ पुन्न दान दिन करत बितए ॥
तही प्रकाश हमारा भयो ॥ पटना सहर बिखै भव लयो ॥ *(बचित्र नाटक)*

प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. फौजा सिंघ के अनुसार जिस घर में बालक गोबिंद राय जी का जन्म हुआ था, उसके निकट फ़तहि चंद मैनी खत्री रहता था। वह नि:संतान था। उसकी सुशील स्वभाव की स्त्री पड़ोसी बालक को 'बाल प्रियतम' पुकारा करती थी और घुटनों के बल चलने वाले को दूध, पूरी तथा तले हुए चने भेंट किया करती थी। आज फ़तहि चंद का वह मकान एक सिक्ख गुरुद्वारे के रूप में विद्यमान है, जो कि मकान मालिक मैनी के कारण 'मैनी संगत' पुकारा जाता है। इस धार्मिक स्थल पर आने वाले श्रद्धालुओं को अब भी तले हुए चनों का प्रसाद बांटा जाता है।

बाल गोबिंद राय जी की ख्याति बाल्यावस्था में ही फैलने लगी थी। घड़ाम (ज़िला पटियाला) के निवासी एक मुस्लिम फ़कीर सैयद भीखम शाह को पटना शहर में एक दिव्य-ज्योति प्रकट होने का आभास हुआ। वह उसके दर्शन करने और परीक्षा हेतु बालक के पास पहुंचा। किंतु वह जिस प्रकार परीक्षक बनकर गया और उसने जो निष्कर्ष निकाले वे सोलह आने सच हुए।

श्री अनंदपुर साहिब में आगमन और शौर्य-प्रदर्शन : बालक गोबिंद राय जी पांच वर्ष की अवस्था में अपने माता-पिता सहित 'चक्क नानकी' आ गए। यही गांव आगे चलकर 'श्री अनंदपुर साहिब' के नाम से विख्यात हुआ। वहीं पर उन्होंने अक्षर-ज्ञान और शस्त्र-विद्या प्राप्त की। उन दिनों दिल्ली साम्राज्य का बादशाह औरंगज़ेब था, जो कि कट्टर मुसलमान था। उसके आदेश पर कश्मीर के मुगल सूबेदार इफ़्तार ख़ान ने कश्मीरी पंडितों को पहले धन और धरती का लालच दिया तथा मधुर भाषा में मुसलमान बनने के लिए प्रेरित किया किंतु जब उसकी पूरी दाल न गली तो उसने ज़ोर-ज़बरदस्ती का सहारा लिया। मटन (कश्मीर का एक क्षेत्र) का निवासी पंडित कृपा राम दत्त सिक्ख गुरु साहिबान की निर्भीकता से परिचित था। उसके नेतृत्व में कश्मीरी ब्राह्मणों का एक शिष्ट मंडल श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास

**१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल चंद स्ट्रीट, नज़दीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)*

अपनी फरियाद लेकर श्री अनंदपुर साहिब में पधारा। नौ वर्षीय बालक गोबिंद राय जी ने अपने पूज्य पिता को उनकी भरसक सहायता के लिए प्रेरित किया।

अंतर्यामी श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी भावी से परिचित थे और निर्दयी बादशाह औरंगज़ेब की धमकियों से न डरे। फलत: दिल्ली के चांदनी चौक में तिलक जंञू की रक्षा हेतु शहादत प्राप्त की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ ने 'बचित्र नाटक' में पूज्य पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब के आत्म-बलिदान का चित्रण इस प्रकार किया है :

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥
(बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नवम् पातशाह की शहादत का दर्दनाक समाचार सुनकर अपने कथन पर पछताए और डगमगाए नहीं। प्रत्युत किशोरावस्था में पहुंचने पर उन्होंने अपने श्रद्धालुओं को अपने दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की तरह शस्त्रास्त्र धारण करने का आदेश दे दिया। उनकी इस नीति के कारण कहिलूर (आधुनिक हिमाचल प्रदेश) का राजा घबरा गया, क्योंकि श्री अनंदपुर साहिब उस समय उसकी राज्य-सीमा के अंतर्गत आता था। वह गुरु साहिब के शस्त्रधारी शिष्यों की संख्या बढ़ती देखकर चिंतित था। वैसे भी पर्वतीय राजाओं में रोटी-बेटी के संबंधों के कारण मन-मुटाव रहता ही था, जिसका दुरुपयोग मुगल शासक करने लगे थे। इसीलिए सरहिंद में स्थित उनके सूबेदार किसी न किसी प्रकार गुरु साहिब की सैन्य-शक्ति बढ़ती देखकर पहाड़ी राजाओं को गलत-सलत खबरें भेजते रहते थे। नाहन के राजा के निमंत्रण पर गुरु साहिब यमुना के किनारे पाउंटा साहिब में जा टिके तो नाहन राज्य के विरोधियों के कान खड़े हो गए और उन्होंने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी किंतु गुरु साहिब ने पाउंटा साहिब से लगभग सात किलोमीटर की दूरी पर उत्तर दिशा में स्थित यमुना नदी के किनारे 'भंगाणी' नामक स्थान पर विरोधियों के दांत खट्टे कर दिए। 'भंगाणी का युद्ध' अप्रैल, सन् १६८९ में लड़ा गया। इस युद्ध में सढौरा (वर्तमान हरियाणा प्रदेश के ज़िला अंबाला का एक प्रसिद्ध कसबा) के मुस्लिम पीर बदरुद्दीन (उपनाम बुद्धू शाह) ने भी भाग लिया। इस युद्ध में गुरु साहिब की ओर से लड़ते हुए पीर शाह के पुत्र भी शहीद हुए। इस युद्ध में लाल चंद नामक एक हलवाई और जटाधारी महंत कृपाल भी वैरियों पर हावी हुए। इससे प्रभावित होकर इतिहासकार सैयद मुहम्मद लातीफ ने लिखा है :

His army was to be based on social justice. There could be no discrimination in the name of caste, creed and colour. His soldiers unpaid, ill-armed, Poorly equipped and untrained were to be inspired with rhe feelings of patriotism and nationalism.

(History of the Punjab)

इस विजय से प्रभावित होकर कहिलूर के राजा भीम चंद व कुछ दूसरे पहाड़ी राजाओं ने गुरु साहिब की शरण ली तथा उनके भरोसे पर मुगल सम्राट के पास अपना वार्षिक कर भेजना बंद कर दिया। मुगलों के फौजदार जब अपने सैनिकों के साथ मुगलों के जागीरदार समझे जाने वाले राजाओं को डराने-धमकाने

आए तो गुरु साहिब के सिक्खों ने उन्हें मार भगाया। किंतु जब अलफ ख़ान के अधीन मुगलों की विशाल सेना विगत वर्षों का कर उगराहने आई तो 'नादौण' के निकट गुरु साहिब और राजाओं के सैनिकों ने उसे परास्त कर दिया।

खालसा पंथ की स्थापना : भले ही श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित भक्ति-परक सिक्ख धर्म छठम् गुरु साहिब श्री हरिगोबिंद साहिब जी के समय से शक्ति-परक भी बनने लगे थे, फिर भी इसे परिपक्व करने के लिए ३० मार्च, सन् १६९९ ई को वैसाखी के दिन श्री अनंदपुर साहिब में स्थित श्री केसगढ़ साहिब में एक भारी दीवान का आयोजन किया गया। वहां पर पधारने वालों में से आत्माभूति के लिए तैयार पांच सिरों की मांग की। एक-एक करके पंजाब के लाहौर नगर का खत्री (क्षत्रिय वंशज़) दइआ राम, दिल्ली निवासी (जाट) धरम दास, जगन्नाथ पुरी (उड़ीसा) का रसोइया हिम्मत राय, द्वारिका (गुजरात) का छींबा (दर्जा) मोहकम चंद तथा बिदर (तत्कालीन आंध्र प्रदेश) का साहिब चंद हाज़िर हुए। उनके साहस की परीक्षा लेकर गुरु साहिब ने उन्हें 'खंडे बाटे का अमृत' छकाया तथा उनके हाथों स्वयं अमृत छका। उन्हें पांच ककार (कछिहरा, केश, कड़ा, कृपाण और कंघा) सजाने का आदेश दिया गया। समूचे भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले ये महानुभाव 'पंज पिआरे' (पांच प्यारे) के नाम से विख्यात हुए। भाई गुरदास ने खालसा-पंथ का परिचय इन शब्दों में दिया है :

उहु गुरु गोबिंद होइ प्रगटिओ दसवां अवतारा।
निज पंथ चलाइओ खालसा धरि तेज करारा।
सिर केस धारि गहि खड़ग को सभ दुसट पछारा।. . .
इउं उपजे सिंघ भुजंगीए नील अंबर धारा।
(वार : ४१)

जीवन के अन्य कार्य : तदनंतर गुरु साहिब ने 'हुसैनी युद्ध' में विजय प्राप्त की। किंतु इस युद्ध में पराजित एक पहाड़ी राजा ने सरहिंद के सूबेदार की सहायता से श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। बहुत दिनों तक शत्रु की विशाल सेना से लड़ते हुए गुरु साहिब ने दिसंबर, १७०४ ई को श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दिया। रास्ते में वे कोटला निहंग ख़ान में ठहरे, जहां पर निहंग ख़ान के पुत्र आलम ख़ान ने पूर्ण श्रद्धावश गुरु जी तथा उनके सिक्खों के लिए गढ़ी के द्वार खोल दिए। पूरा दिन वहां टिकने पर चलने से पूर्व गुरु जी ने इस परिवार की सेवा से प्रसन्न होकर उसे एक कटार तथा एक ढाल भेंट की जो कि सन् १९४७ ई तक उनके ख़ानदान में रही। आजकल ये दोनों शस्त्र 'गुरुद्वारा भट्ठा साहिब' में सुरक्षित हैं।

माछीवाड़े के वनों में गुरु जी के दो मुसलमान श्रद्धालु नबी ख़ान और गनी ख़ान ने उनकी बड़ी सहायता की। गुरु साहिब ने औरंगज़ेब को उसके अधर्मी कार्यों के प्रति धिक्कारते हुए दीना कांगड़ से एक पत्र लिखा, जो कि 'दसम-ग्रंथ' में 'जफरनामा' शीर्षक से संकलित है।

गुरु साहिब का मुगलों से अंतिम युद्ध 'मुक्तसर' में हुआ; इसमें मुगलों को बुरी तरह मुंह की खानी पड़ी। वहां से गुरु साहिब 'तलवंडी साबो' (पंजाब के बठिंडा ज़िला में स्थित) पहुंचे। 'दमदमा साहिब' के नाम से प्रसिद्ध इस कसबे में श्री गुरु गोबिंद सिंघ ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अपने पूज्य पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी का संकलन करवाया।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

मानवता के प्रकाश-स्तंभ : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व अत्यंत बहुपक्षीय एवं बहुआयामी था। गुरु जी की शख़्सियत में एक साथ अनेक गुण एवं विशेषताएं उपस्थित दिखती हैं। वास्तव में दशमेश पिता जी एक संपूर्ण एवं आदर्श व्यक्तित्व हैं, जिनसे प्रेरित होकर मनुष्य न सिर्फ जीवन उच्चतम उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है बल्कि जीवन की आम समस्याओं से निपटने के लिए भी मार्ग-दर्शन हासिल कर सकता है। दूसरे शब्दों में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी मानवता के प्रकाश-स्तंभ हैं।

संत सिपाही : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संत भी थे और सिपाही भी परंतु उनके सैनिक व्यक्तित्व पर भी उनका आध्यात्मिक व्यक्तित्व छाया रहता था। गुरु जी ने किसी को दुख देने के लिए या किसी लोभ-लालच के लिए कृपाण नहीं उठाई वरन् गरीबों-पीड़ितों की रक्षा और अत्याचार के विरोध हेतु शस्त्र हाथ में लिए। युद्ध करते समय भी गुरु जी का हृदय उच्च मानवीय गुणों से ओत-प्रोत रहता। यह बात प्रसिद्ध है कि गुरु जी के तीरों में सोना मढ़ा होता था ताकि उस तीर से मरने वाले को अंतिम संस्कार का सामान मिल सके और यदि वह घायल हुआ है तो उसे इलाज का ख़र्च मिल सके। जब गुरु जी के पास भाई घन्हैया जी की शिकायत पहुंची कि यह शत्रु दल के घायल व्यक्तियों को भी पानी पिलाता है तो गुरु जी ने भाई घन्हैया की प्रशंसा की और दवा-दारू अपने पास से देकर आज्ञा दी कि अब उनकी मरहम-पट्टी भी किया करो।

गुरु जी का यह उच्च आचरण मनुष्य को सिखाता है कि परिस्थितियां कितनी भी विपरीत हों, मानवीय मूल्यों को कभी नहीं भूलना चाहिए।

मानवीय समता के अलंबरदार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सारा संघर्ष दलित-शोषित मानवता की रक्षा के लिए था। आपने दबे-कुचले लोगों को एकत्र कर 'खालसा पंथ' का सृजन कर ऐसी अदम्य शक्तिशाली सेना तैयार की जिसने अपने समय की सबसे बड़ी सैनिक शक्तियों को परास्त किया। 'चिड़ियों ते मैं बाज तुड़ाऊं' और 'सवा लाख से एक लड़ाऊं' का घोष करके गुरु जी ने जनता की उस सोई शक्ति को जगा दिया जो अपने सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी ताकत से भिड़ने में समर्थ है। यही नहीं गुरु जी ने 'इनहिं ते राजे उपजाऊं कहकर शक्तिहीन जनता को राजनीतिक शक्ति हासिल करने लायक भी बनाया। गुरु जी द्वारा सृजित 'खालसा पंथ' जात-पात, ऊंच-नीच आदि समस्त भेदभावों से मुक्त और सभी प्राणियों को एक ही ईश्वर की संतान मानने वाला है।

गुरु जी का संदेश स्पष्ट है कि सभी मनुष्य समान हैं और सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्थाओं में उनकी भागीदारी बराबर है।

आध्यात्मिक नेतृत्व : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मनुष्य को आदर्श आचरण धारण करने के लिए प्रतिबद्ध किया। गुरु जी द्वारा प्रदत्त पांच ककार उच्च एवं आदर्श जीवन के प्रतीक हैं। 'केश'-

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : +९१९४१७२-७६२७१*

श्रेष्ठ चिंतन, 'कृपाण'-शक्ति, 'कछहरा'-सदाचार, 'कड़ा'-संयम और 'कंघा'-स्वच्छता एवं निर्मलता का प्रतीक है।

महान कवि एवं भाषाविद् : महान् कवि एवं भाषाविद् होना गुरु जी के व्यक्तित्व के भावुक एवं संवेदनशील पक्ष को उजागर करता है। 'अकाल उसतति', 'जापु साहिब', ज़फ़रनामा जैसी पावन बाणियों के रचनहार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कवियों एवं विद्वानों का बहुत सम्मान करते थे। गुरु जी के विद्या-दरबार में ५२ कवियों समेत शताधिक विद्वान थे जो निरंतर श्रेष्ठ साहित्य-सृजन एवं प्राचीन ग्रंथों के अनुवाद कार्य में लगे रहते थे। यही नहीं गुरु जी संस्कृत, अरबी, फारसी, ब्रज, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं में पारंगत थे।

गुरु जी का अभिप्राय था कि संवेदनशील मनुष्य की उत्पत्ति ज्ञानार्जन एवं श्रेष्ठ साहित्य द्वारा ही संभव है। अत: दशमेश पिता जी के दरबार में श्रेष्ठ ज्ञान को साधारण जन तक पहुंचाने का प्रयत्न सदैव जारी रहा।

सरवंश बलिदानी : विश्व-इतिहास आत्म बलिदानियों के अनगिनत उदाहरणों से भरा पड़ा है! परंतु सरवंश बलिदान की मात्र एक ही मिसाल मिलती है- श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी। गुरु जी के परदादा पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने शहीदी देकर इस बलिदान-परंपरा का प्रारंभ किया। फिर गुरु जी के पिता नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी ने चांदनी चौक में शीश कटवाकर बलिदान दिया। गुरु जी के चारों साहिबज़ादे भी मानवता की रक्षा हेतु कुर्बान हुए। गुरु जी के माता, 'माता गुजरी जी' भी इसी संघर्ष में प्रभु चरणों में जा विराजमान हुए।

गुरु जी ने सिद्ध कर दिया कि सत्य और मानवता की रक्षा के लिए यदि मनुष्य को सर्वस्व भी बलिदान करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए।

वास्तव में गुरु जी का विराट् व्यक्तित्व मानवता के लिए एक प्रज्वलित प्रकाश-स्तंभ है जो मनुष्य को उच्च, श्रेष्ठ, आदर्श एवं सार्थक जीवन बिताने का मार्ग दर्शाता है।

भावात्मक एकता से ओत-प्रोत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी *(पृष्ठ १४ का शेष)*

कुछ दिन ठहरने के बाद गुरु साहिब दक्षिण दिशा की ओर चल पड़े। रास्ते में राजस्थान स्थित 'नारायणा' के 'दादू डेरे' में ठहरे। भक्त दादू श्री गुरु अरजन देव जी के समकालीन थे और उनकी शिक्षा के कई पक्ष गुरमति से निकटता रखते हैं। दादू पंथियों ने गुरु साहिब का हार्दिक स्वागत किया। इसी बीच बादशाह औरंगज़ेब संसार से कूच कर गया और उसका ज्येष्ठ पुत्र मुअज्जम 'बहादुर शाह' के नाम से दिल्ली का मुगल शासक बना। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नए शासक के आमंत्रण पर उससे भेंट करने दिल्ली पहुंचे, क्योंकि वे तो सर्वधर्म समभाव में आस्था रखते थे; यथा :

हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥

(दसम ग्रंथ)

बहादुर शाह से मिलने के पश्चात् गुरु साहिब अंधेर (वर्तमान जयपुर), मेड़ता, अजमेर, पुष्कर और चित्तौड़गढ़ भी गए। उनकी कुछ यादगारी वस्तुएं उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित हैं। इस प्रकार वे नंदेड़ (महाराष्ट्र) पहुंच गए। वहीं पर उन्होंने 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' को गुरु पदवी प्रदान की और 'ज्योति जोत' समा गए।



श्री गुरु हरिराय साहिब जी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्खों के सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब जी का जन्म बाबा गुरदित्ता जी के गृह में माता निहाल कौर की कोख से श्री कीरतपुर साहिब में हुआ। भिन्न-भिन्न इतिहासकारों ने इनकी माता जी के भिन्न-भिन्न नाम लिखे हैं जैसे- - माता अनंती जी, माता राज कौर जी आदि।

श्री गुरु नानक देव जी की सातवीं ज्योति श्री गुरु हरिराय साहिब जी का स्वभाव बहुत शांत एवं सहज था। इनका हृदय अति कोमल व संवेदनशील था। गुरु जी दया, नम्रता, करुणा और प्रेम के सागर थे। वे प्रत्येक प्राकृतिक वस्तुओं को बेहद प्यार करते थे।

एक बार श्री गुरु हरिराय साहिब जी नित्यप्रति की भांति बाग में प्रात:काल की सैर कर रहे थे। इनके चोले से उलझकर एक फूल टूटकर भूमि पर बिखर गया। श्री गुरु हरिगोबिंद जी ने सहज-भाव से कहा, चोला जब बड़ा हो तो उसे समेटकर चलना चाहिए ताकि किसी का अहित न हो।

उस दिन से लेकर ज्योति-ज्योति समाने तक सातवें गुरु जी ने बेशक अनेक बार कलियों वाला चोला पहना परंतु उसे सहेज-संभालकर ही पहना। साथ ही शाखा से फूल गिरने का असर इनके कोमल मन पर ऐसा पड़ा कि तमाम उम्र किसी के मन को दुख नहीं पहुंचाया।

परम ज्योति में लीन होने से पूर्व श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी गुरगद्दी इन्हें सौंप गए थे। अत: वे चौदह वर्ष की आयु में गुरगद्दी पर विराजमान हुए। फिर इन्होंने पूर्व सिक्ख गुरु साहिबान के मार्ग पर चलते हुए गुरबाणी के प्रचार-प्रसार का कार्य संभाल लिया। श्री गुरु हरिराय साहिब शांत स्वभाव के स्वामी थे। इनके पास २२०० घुड़सवार सिंघों की सेना थी किंतु इन्होंने कभी भी किसी पर हमला नहीं किया।

जब पंजाब के मालवा क्षेत्र में अकाल (सूखा) पड़ गया, तब गुरु जी ने वहां पर जगह-जगह लंगर लगवा दिए और लंगर बांटने के वक्त नगाड़ा बजाने की परंपरा भी इन्होंने ही प्रारंभ की ताकि दूरस्थ स्थानों पर मौजूद संगतें आवाज़ सुन लंगर छकने हेतु आ सके। श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी द्वारा स्थापित औषधालय (दवाखाना) को भी बादस्तूर जारी रखा और बड़े औषधालय के रूप में विकसित किया। इनके पास सरकारी वैद्यों व हकीमों के पास मौजूद औषधियों से कहीं बढ़िया औषधियां थीं।

एक बार औरंगज़ेब ने धोखे से अपने भाई दारा शिकोह को शेर की मूँछ का बाल खिलवा दिया। उसकी तबीयत काफी बिगड़ गई और उसे कहीं से भी आराम न मिला। उसके पिता बादशाह शाहजहां ने आग्रहपूर्वक श्री गुरु हरिराय साहिब जी से अपने एक दरबारी द्वारा औषधि मंगवाई। गुरु जी ने बिना किसी वैर-विरोध के औषधि दे दी, जिसे खाने के बाद दारा शिकोह बिल्कुल स्वस्थ हो गया। फिर तो दारा शिकोह गुरु-घर का श्रद्धालु बन गया। दूसरी तरफ औरंगज़ेब अपने मन में गुरु-घर के प्रति रंजिश रखने लगा। वह घोर कट्टरवादी था।

मुगल बादशाह शाहजहां के चार पुत्र थे-- दारा शिकोह, शुज़ा, औरंगज़ेब तथा मुराद।

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : +९१९८७२२-५४९९०*

शाहजहां बीमार पड़ गया और उसने अपनी सल्तनत चार भागों में बांट दी। मगर औरंगज़ेब ने चालाकी व मक्कारी से शाहजहां को कैद कर लिया और दारा शिकोह के खून का प्यासा बन गया। वह अपनी जान बचाकर भाग निकला तथा श्री गुरु हरिराय साहिब जी की शरण में पहुंच गया। उसने गुरु जी से प्रार्थना की कि वे ज़ालिम औरंगज़ेब को ब्यास दरिया के किनारे कुछ देर के लिए रोक रखें। तब तक वह लाहौर में पहुंच जाएगा। यह बात जून, १६५८ ई की है। गुरु जी ने चौधरी लंगाह के पुत्र सिकंदर को अपनी सेना देकर दारा की मदद हेतु भेजा और उसे ब्यास दरिया के पार पहुंचाया। दारा शिकोह लाहौर में पहुंच गया और फिर १८ अगस्त को वहां से मुलतान भाग गया। इसी दिन औरंगज़ेब ने लाहौर पर भी कब्ज़ा कर लिया। दारा शिकोह ज्यादा देर तक बचा न रह सका। उसे पकड़ लिया गया तथा कत्ल कर दिया गया।

गुरु-घर के घोर विरोधियों ने औरंगज़ेब के कान भरे कि सिक्खों के गुरु ने दारा शिकोह की मदद की है और जो इन्होंने धर्म ग्रंथ की रचना कर रखी है, उसमें मुसलमानों व इस्लाम के खिलाफ़ लिखा हुआ है। औरंगज़ेब ने स्पष्टीकरण के लिए श्री गुरु हरिराय साहिब जी को दिल्ली बुलवा लिया। गुरु जी औरंगज़ेब की कुटिल चालों को समझते थे। इन्होंने "तेरे दाम नहीं हम देने। अर नहि ख्वाहिश तुम ते लैने।" फरमाते हुए दिल्ली जाने से स्पष्ट मना कर दिया और अपने बड़े बेटे राम राय को दिल्ली भेजा। श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने राम राय को समझाया कि दिल्ली में जाकर कोई करामात नहीं दिखानी और न ही श्री गुरु नानक देव जी के घर की हानि होनी चाहिए। औरंगज़ेब जो कुछ पूछे, उसका उत्तर दृढ़तापूर्वक व निडरता के साथ देना। अकाल पुरख के सिवाय किसी का भी भय या डर मन में नहीं रखना। सदैव सच्चाई पर पहरा देना परंतु काज़ियों द्वारा कहने पर औरंगज़ेब ने जब राम राय से पूछा कि श्री गुरु नानक देव जी ने यह जो लिखा है, इसका क्या भावार्थ है :

मिटी मुसलमान की, पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ, जलदी करे पुकार ॥
(पन्ना ४६६)

राम राय डोल गया और अपने पिता गुरु जी का फ़रमान भूल गया। राम राय औरंगज़ेब को खुश करने के लिए कहने लगा कि सलोक में "मिटी मुसलमान की, पेड़ै पई कुम्हिआर ॥" पंक्ति गलत पढ़ व लिखी गई है। दरअसल यह पंक्ति "मिटी बेईमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥" है। औरंगज़ेब इस स्पष्टीकरण से संतुष्ट हो गया।

श्री गुरु हरिराय साहिब जी को जब उपरोक्त घटना का पता चला, तब इन्होंने उसे अल्प मति (बुद्धि) वाला बताया। गुरु जी ने संदेश भिजवा दिया कि राम राय ने डर व खुशामद के वशीभूत होकर गुरबाणी की पंक्ति को बदला है, उसने गुरबाणी का सम्मान नहीं किया। अब उसे यह दंड है कि वह अब हमारे कभी माथे न लगे। औरंगज़ेब अपनी कुटिल चाल चल चुका था। उसने एक जागीर देकर राम राय जी को प्रभावित किया था।

राम राय को गुरगद्दी के योग्य न पाकर, श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने अपने छोटे सुपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन जी को गुरगद्दी सौंपने का निर्णय ले लिया।

इसके कुछ दिनों बाद श्री गुरु हरिराय साहिब जी परम ज्योति में विलीन हो गए। सातवें पातशाह जी ने सत्रह वर्षों तक गुरगद्दी की जिम्मेवारी को संभाले रखा और सिक्ख धर्म प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान डाला। लंगर के बांटने के वक्त नगाड़ा बजवाना, गुरबाणी का असीम सम्मान, प्रचार हेतु विशेष कार्य, पंथ को भावी ख़तरों के प्रति सचेत करना, औषधालय को विस्तृत करना, सरकार के चापलूसों को तिरस्कृत करना गुरु जी के अनेक कौतुकों में से कुछेक हैं। ❁

उदमु करत आनदु भइआ . .

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

श्री गुरु हरिराय साहिब जी से सम्बंधित सुविदित घटना है कि जब बचपन में वे बाग में टहल रहे थे तो उनके चोगे (चोले) से अटककर कुछ फूल बिखर कर गिर गए जिससे वे दुखी होकर विचारमग्न हो गए। इतने में उनके दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी आ गए और बालक श्री (गुरु) हरिराय जी से उनके दुख का कारण पूछा। श्री गुरु हरिराय साहिब जी द्वारा पूरी घटना बताये जाने पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने उन्हें समझाया कि चोला जब बड़ा हो तो उसे समेट कर चलना चाहिए ताकि किसी का अहित न हो। यह सीख जो श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने उन्हें दी इसमें गुरमति का सार निहित था। शक्ति का ग्रहण करना और उसकी मर्यादा को बनाये रखना ही सिक्ख धर्म का केंद्रीय विचार था, जिसने अध्यात्म को नूतन दृष्टि प्रदान की और जीवन को नया परिप्रेक्ष्य दिया। वास्तव में सिक्ख गुरु साहिबान ने सदियों से व्याप्त जन्म और मृत्यु के पूर्वाग्रहों तथा संशयों को देखते हुए मनुष्य के एक ऐसे क्रियाशील जीवन की अवधारणा को विश्व के सामने रखा जो पूर्व के सभी जीवन विचारों से भिन्न और विशिष्ट था क्योंकि इसमें मात्र कर्त्तव्य परायणता का तत्व ही नहीं था जो बौद्धिक विचार से प्रेरित हो वरन् इसे मन से जोड़कर अंतर्निहित भाव बनाया गया ताकि जीवन को सुरुचिपूर्ण व रसमय बनाया जा सके और जीवन अवसर का सदोपयोग किया जा सके। वास्तव में गुरमति का उद्देश्य ही मानव जीवन की सफलता को सुनिश्चित करना है जो चौरासी लाख योनियों से गुज़रते हुए सौभाग्य से प्राप्त होता है और इसका उपयोग धर्म संगत तरीके से करके आवागमन के फेर और जन्म-मृत्यु के भय से मुक्त हुआ जा सकता है। गुरमति का यह धर्म संगत मार्ग, गुफाओं, कंदराओं में बैठकर तप करना, गृह-परिवार त्यागकर वन में हठयोग साधना करना, पर्वतों की चोटियों पर एकांतवास करना नहीं था। यह सारे मार्ग कर्त्तव्यों से पलायन के मार्ग थे। गुरमति ने गृहस्थ जीवन में रहकर कर्त्तव्यों के पालन की राह दिखाई किंतु लक्ष्य की भांति नहीं। गृहस्थ जीवन का अर्थ आम लोगों के लिए पहले भी था और आज भी है; स्वयं के लिए और परिवार के लिए भरपूर सुख-सुविधाएं, धन-दौलत, संपत्ति और ख्याति अर्जित करना और इसके लिए दिन-रात जूझते रहना। गृहस्थ लालसाओं, कामनाओं से भरा होता है और संचय का अभिलाषी होता है। लेकिन सिक्ख गुरु साहिबान ने कामनाओं और संचय की प्रवृत्ति की धारा मोड़ दी।

सो गिरही जो निग्रहु करै ॥
जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥
पुंन दान का करे सरीरु ॥
सो गिरही गंगा का नीरु ॥
बोलै ईसरु सति सरूपु ॥
परम तंत महि रेख न रूपु ॥ (पन्ना ९५२)

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: +९१९४१५९-६०५३३*

श्री गुरु नानक साहिब के उपरोक्त वचन ने गृहस्थ जीवन की नई परिभाषा लिखी। गुरु साहिब ने कहा कि सच्चा गृहस्थी वह है जो अपनी इंद्रियों को वश में कर लेता है और कुकर्मों की ओर उन्मुख नहीं होने देता। इससे उसकी सांसारिक लालसायें शांत हो जाती हैं तथा भटकन मिट जाती है। इंद्रियां सिर्फ अवरोध अथवा नियंत्रण से वश में नहीं होतीं, उनकी चंचलता को स्थिर करने के लिए गुरु साहिब ने जप, तप और संयम की लालसा करने को कहा। यह एक अनूठी और विस्मित कर देने वाली राह थी, जिसके बारे में शायद कभी संकेत मात्र भी नहीं हुआ होगा।

इंद्रियों के हठधर्मी से बांध देने के स्थान पर उनकी ऊर्जा को आत्मिक विकास की ओर मोड़ देना, जीवन का सच्चा लक्ष्य तय कर देने जैसा था। गुरु साहिब ने कहा कि तन को माया मोह अथवा सन्यास में कष्ट देने के स्थान पर परोपकार में लगाना तन की सफलता है। इससे तन पवित्र हो जाता है। इससे वाणी में शुद्धता आ जाती है और माया मोह के स्थान पर ईश्वर की महानता आकर्षित करने लगती है। इस तरह एक ऐसे गृहस्थ की कल्पना की गई जो पवित्र भावनाओं की लालसा पाले और स्वयं को परोपकार में लगाकर परमात्मा की श्रेष्ठता से जोड़े। ऐसा गृहस्थ मोह माया भरे संसार में भी सांसारिक चमक से विरक्त रहता है।

मन रे ग्रिह ही माहि उदासु ॥
सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥
(पन्ना २६)

संसार और परिवार में रहते हुए भी सांसारिक चमक से विरक्त रहना क्षमता और कार्यों में संयम से ही संभव है। ऐसा करने से जीवन में प्रफुल्लता आ जाती है। श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की सीख पर अमल किया और समय आने पर वे गुरगद्दी पर आसीन हुए। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने बाकायदा फौज तैयार की थी। उन्हें युद्ध भी लड़ने पड़े किंतु श्री गुरु हरिराय साहिब जी के सत्रह वर्ष के गुरगद्दी काल में युद्ध की कोई स्थिति नहीं बनी और इसका उपयोग गुरु साहिब ने सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु किया किंतु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी द्वारा स्थापित परंपरा के अनुसार श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने भी शूरवीर जवानों की फौज सदैव तैयार रखी, जिसकी निगरानी वे स्वयं करते थे। इन जवानों की शारीरिक कसरत, वाज़िब खुराक, फौज के घोड़ों की खुराक, मालिश आदि अपने सामने करवाते थे। वे स्वयं भी बलिष्ठ शरीर के मालिक और निर्भीक, साहसी योद्धा थे किंतु उन्होंने अपनी शक्ति को सयंमित रखने का महान आदर्श संसार के सामने रखा। सारी शक्तियां अंतर में ही समाहित हैं, इसे श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने सिद्ध किया।

मन की परतीति मन ते पाई ॥
पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥
जीवण मरणु को समसरि वेखै ॥
बहुड़ि न मरै ना जमु पेखै ॥
घर ही महि सभि कोट निधान ॥
सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥
सद ही लागा सहजि धिआन ॥
अनदिनु गावै एको नाम ॥ (पन्ना ७९८)

उपरोक्त वचनों में गंभीर रहस्य की बात कही गई है। जिस मन की चंचलता मनुष्य को जीवन भर उलझाए रखती है और वह निरर्थक कार्यों में अपने जीवन को नष्ट कर देता है,

वह मन कैसे उसकी साधना और प्राप्ति का माध्यम बन जाता है? मन की गति से तो बड़े-बड़े साधक तपस्वी और संत हारते रहे हैं। मन को तो वश में न आ सकने वाली चीज़ मान लिया गया है और कठोर से कठोर हठ भी मन को नहीं बांध सकते लेकिन यह ज्ञान गुरु साहिबान ने दिया कि मन की दवा गुरु-शबद है। सतिगुरु की बाणी से जुड़कर मन की शक्ति परमात्मा को प्राप्त करने का स्रोत बन जाती है। गुरु-शबद से जुड़ा मन सम दृष्टि को पा लेता है, सारे विकार मिट जाते हैं और मनुष्य सहज अवस्था में पहुंचकर परमात्मा के मार्ग पर चल पड़ता है। इंद्रियों के निग्रह से प्राप्त इस समदृष्टि ने ही श्री गुरु हरिराय साहिब जी को शक्तिशाली होते हुए भी विनयी और दयालु होने की वृत्ति प्रदान की। एक ओर जहां वे फौज को बलशाली बनाये रखने का निजी तौर पर ध्यान रखते हैं वहीं उन्होंने एक ऐसा दवाखाना खोला जिसमें दुर्लभ औषधियां जुटाई गईं थी और हर तरह के रोगों का ईलाज होता था। गुरु साहिब शिकार के बड़े शौकीन थे और अच्छे शिकारी थे किंतु दिलचस्प बात यह कि वे शिकार को मारने की जगह उसे पकड़ना अधिक पसंद करते थे। गुरु साहिब द्वारा शिकार में पकड़े गये पशु-पक्षियों से उनका पूरा बाग भर गया था। पकड़े गये पशु-पक्षियों की पूरी देखभाल की जाती थी। यह था गुरु-शबद प्रताप, जिसने शक्ति में सहृदयता को जन्म दिया।

उलटिओ कमलु ब्रहमु बीचारि ॥
अंम्रित धार गगनि दस दुआरि ॥
त्रिभवणु बेधिआ आपि मुरारि ॥ (पन्ना १५३)

श्री गुरु नानक साहिब ने उपरोक्त वचन में स्पष्ट किया कि मन को सही दिशा और दशा में लाना आवश्यक है और यह काम परमात्मा के विचार अर्थात् गुरु-शबद ने किया। मन को गुरु-शबद के निर्मल प्रवाह से पवित्र करके संसार की सबसे बड़ी उपलब्धि, आवागमन से मुक्ति प्राप्त कर ली गई। मन जो आज तक करता चला आ रहा था अब ठीक उसके विपरीत करने लगा और जीवन को संशयों, भ्रमों के दुख की जगह स्थिरता, सहजता का सुख देने लगा। यह परिवर्तन अंदर, मन के तल पर भी हुआ और बाहर धर्म के पालन और अनुसरण के तल पर भी मन की सहजता बाहर प्रकट होने लगी। श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने इसी मार्ग पर चलते हुए जब अपने पुत्र श्री राम राय को मुगल शासक औरंगज़ेब से मिलने दिल्ली भेजा तो सख़्त हिदायत दी कि वहां कोई भी बात श्री गुरु नानक साहिब के उपदेशों के विपरीत नहीं करनी है। इसके बावजूद जब राम राय ने औरंगजेब को खुश करने के लिए गुरबाणी में शबद परिवर्तन कर दिया तो श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने आजीवन रामराय को अपने माथे न लगने का संकल्प लिया और इसे उम्र भर निभाया, यह था मन को दृढ़ करना। मन परमात्मा की शरण में जाकर परिपक्व हो जाता है।

गुरमुखि करणी कार कमावै ॥
ता इसु मन की सोझी पावै ॥
मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥ (पन्ना ६६५)

प्रभु की कृपा के बिना मन को साधना संभव नहीं है। साधारण व्यक्ति प्रतिदिन अनेक निश्चय करता है किंतु उन पर अडिग नहीं रह पाता। किन्ही परिस्थितियों वश अथवा मोह, भावना में अपने निर्णय बदल लेता है और उसके कारण भी ढूंढ लेता है, औचित्य साबित करने के लिए। श्री गुरु हरिराय साहिब जी के

लिए निश्चय ही यह एक अति कठोर निर्णय रहा होगा लेकिन जब हम उनके मन की श्रेष्ठता को समझने का तुच्छ प्रयत्न करते हैं तो गर्व की अनुभूति होती है कि मन की भावनाओं का ऐसा सहज संतुलन भी संभव है। मन की भावनायें ही नहीं यहां परिवार की भावनायें भी जुड़ी थीं; वे गुरु भी थे और पिता भी। मन की श्रेष्ठता ने गुरु और पिता को एक कर दिया। श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने श्री गुरु नानक देव जी की मति को अपनी मति बना लिया था गुरु की मति को अपनी मति बना लेना कठिन कार्य है, जिसे गुरु ही कर सकता है।

मन की मति तिआगहु हरि जन एहा बात कठैनी ॥
अनदिनु हरि हरि नामु धिआवहु गुर सतिगुर की मति लैनी ॥ (पन्ना ८००)

गुरसिक्ख के लिए भी गुरु साहिब ने इस कठिन बात को सरल बना दिया और कहा कि वह दिन-रात परमात्मा का नाम जपते-जपते इस अवस्था को पा सकता है तथा परमात्मा के गुणों को अपने गुण बना सकता है। गुरु-शबद गुरसिक्ख को इहलोक और परलोक में भी सम्मान का अधिकारी बनाता है।

सत संतोखी सतिगुरु पूरा ॥
गुर का सबदु मने सो सूरा ॥
साची दरगह साचु निवासा मानै हुकमु रजाई हे ॥ (पन्ना १०२३)

गुरु-शबद को मानने में तो सबसे बड़ा पराक्रम है। श्री गुरु नानक साहिब ने यहां एक बड़ी व्यावहारिक बात भी कही, गुरु साहिब ने कहा कि सच की बात करना तो आसान है। लेकिन सच की बात करने से ही सच नहीं व्याप्त हो जाता। सच्चे मार्ग पर चलने से ही सच का पोषण होता है। श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने इस मार्ग पर स्वयं चलकर दिखाया और जीवन भर पुत्र राम राय को गुरबाणी की पंक्ति बदलने की बात करने पर अपने सामने आने का अवसर नहीं दिया। इससे गुरबाणी के सम्मान एवं श्रेष्टा की सीख भी मिलती है कि कैसे उसका एक-एक शब्द पावन और पवित्र है, जिससे किसी भी तरह की छेड़खानी, अनादर, आलस्य, भ्रामक व्याख्या दंड का भागी बनाती है। अपनी मति का प्रयोग करने वाला *"मनि मुखि साचु भरम भउ भंजनु"* भ्रम में फंसा रहता है और उसका जप-तप व्यर्थ जाता है, जबकि परमेश्वर की मति ग्रहण करके गुरसिक्ख सच का सबसे बड़ा पहरेदार बनकर सामने आता है। यह सच उसके जीवन में आनंद भर देता है और जीवन के सारे दुख-क्लेश मिट जाते हैं। आज और किस चीज़ की चाहत है हमें? हर कोई सुख की तलाश में है और अलग-अलग ज़रिये से सुख पाना चाहता है। गुरमति की राह एकदम विलक्षण और सहज, सरल है जो परम सुख तक ले जाती है, जिसके आगे कुछ बचता ही नहीं है। यह राह तो पूरी मानवता के कल्याण के लिए है ताकि संसार आनंद से भरपूर हो सके।

मेरै मनि अनदिनु अनदु भइआ ॥
गुर परसादि नामु हरि जपिआ मेरे मन का भ्रमु भउ गइआ ॥ (पन्ना १२६४)

दुख मन में भ्रम और भय के कारण ही होता है। हर दुख के मूल में इनमें से ही कम से कम एक तत्व या कभी-कभी दोनों ही तत्व विद्यमान होते हैं। गुरसिक्ख इनका निराकरण सतिगुरु की कृपा से प्रभु का नाम जपते- जपते ही कर लेता है। इन तत्वों के तिरोहित होते ही मन आनंद से भर जाता है और वह जीवन के सभी कार्य इसी आनंद में करने लगता है।

श्री गुरु हरिराय साहिब जी का जीवन इसी आनंद का प्रत्यक्ष प्रमाण था। एक बार गुरु साहिब की बढ़ती प्रतिष्ठा देखकर निकटवर्ती पहाड़ी राजाओं ने उनसे कर वसूलना चाहा। गुरु साहिब ने अपार बल और शक्तिशाली फौज के होते हुए भी उनसे हंसकर कहा कि एक फकीर के पास तो देने को परमात्मा का नाम ही होता है। पहाड़ी राजा बड़े शर्मसार हुए और गुरु साहिब से आशीर्वाद लेकर वापिस लौटे। गुरु जी की बाणी उनके लिए अमृत बन गई।

गुर की बाणी विटहु वारिआ भाई गुर सबद विटहु बलि जाई ॥
गुरु सालाही सद अपणा भाई गुर चरणी चितु लाई ॥१॥
मेरे मन राम नामि चितु लाइ ॥
मनु तनु तेरा हरिआ होवै इकु हरि नामा फलु पाइ ॥१॥ *(पन्ना ११७७)*

सारे गुरसिक्ख गुरु साहिब के जीवन सहजता, गुरबाणी सत्कार की शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन को आनंद से भर लेने का सुअवसर व्यर्थ न जाने दें।

सिमरत सिमरत सिमरीऐ सो पुरखु दातारु ॥
मन ते कबहु न वीसरै सो पुरखु अपारु ॥२॥
चरन कमल सिउ रंगु लगा अचरज गुरदेव ॥
जा कउ किरपा करहु प्रभ ता कउ लावहु सेव ॥३॥
निधि निधान अंम्रितु पीआ मनि तनि आनंद ॥
नानक कबहु न वीसरै प्रभ परमानंद ॥४॥
(पन्ना ६१४) ❁

कविता

वो नूरी जोत

*-स. सतनाम सिंघ कोमल**

वो नूरी जोत दरगाही गुरु हृदय में रही जलती।
बुझी न लाट ही कांपी, रही हैं आंधियां चलती।
यह सदियों से रही जलती, अभी जलती रहेगी जलती।
मनुष्य धरती पे सब इसके, रहेगी वो सदा सबकी।
गुरु नानक वरोसाये, प्रभु के नूर के वारिस।
उम्र भर सफ़र रहे करते, ली है सार सब जग की।
अभिलाषी बनकर खोजे हैं, जुड़े जो साथ प्रभु के हैं।
सुनी सब की कही मन की, बुरी या ठीक है लगती।
प्रभु के बोले मिठड़े हैं, सुनो तुम फिर बनो उसके।
हकीकत अपनी जानो, तो पाना समझ भी उसकी।
तेरी मंज़िल प्रभु दर है, न राहों में भटक जाना।
बना अपना और बन उसका, करो न फ़िक्र इस जग की।
यह घर न है, सरां समझो, करो न मालकी दावे,
जीते जी ही तेरे हैं जबी सांसों की अग्नि जलती।
पढ़ो बाणी सुनो बाणी, आई प्रभ से बसा हृदय,
मिटे हउमैं करो सिमरन, है कोमल बात तब बनती।

248 Urban state,phase-1, Ludhiana-10 Mob.+9198726-09921

तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब

*-प्रो लालमोहर उपाध्याय**

पटना शहर बिहार की राजधानी होने के कारण ही नहीं बल्कि धार्मिक तथा ऐतिहासिक होने के कारण भी महत्त्वपूर्ण है। इसके अलावा यह शहर विद्या तथा साहित्य का भी केन्द्र रहा है। धार्मिक दृष्टिकोण से इसकी महत्ता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म-स्थान होने के कारण भी है। यहां के मुख्य धर्म-स्थान का नाम तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब है। यह सिक्ख धर्म का दूसरा महान तख़्त है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म के समय इस शहर का नाम पटना शहर ही था, जैसा कि उनकी आत्म-कथा 'बचित्र नाटक' में उल्लेख मिलता है:

तही प्रकास हमारा भयो ॥
पटना सहर बिखै भव लयो ॥

पटना शहर ने तीन गुरु साहिबान के चरणों की धूल प्राप्त की है। सबसे पहले इसको श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी पूर्व दिशा की पहली यात्रा के समय पवित्र किया। इस शहर में १५०६ ई में गुरु जी 'पश्चिम दरवाज़ा' से अंदर आए और भक्त जैता मल (आज के गुरुद्वारा गाय घाट साहिब) के पास ठहरे। वहीं से अपने शिष्य भाई मरदाना जी को, जो भूखे थे, एक कीमती हीरा देकर बेचने के लिए भेजा। भाई मरदाना जी कपड़ा बाज़ार तथा सब्जी बाज़ार होते हुए एक जौहरी की दुकान में पहुंचे जिसका नाम सालिस राय था। उसके नौकर अधरका ने हीरा देखते हुए मालिक सालिस राय से मुलाकात कराई। हीरा कीमती होने के कारण सालिस राय ने उसकी दर्शन-भेंट १०० रुपए देकर भाई मरदाना जी को हीरा वापिस कर दिया। श्री गुरु नानक देव जी के नाराज़ होने पर भाई मरदाना जी पुन: सालिस राय के पास वापिस आये। इस उदारता को देखते हुए सालिस राय तथा अधरका ने भाई मरदाना जी से श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन करने की इच्छा जाहिर की और दर्शनोपरांत श्री गुरु नानक देव जी के अनन्य भक्त हो गए। गुरु जी को अपने निवास-स्थान पर पधारने के लिए निमंत्रित किया और सालिस राय के निमंत्रण को स्वीकार करते हुए गुरु जी ऐतिहासिक कथनानुसार लगभग चार महीने यहां पर ठहरे और सुबह-शाम संगत को उपदेश देते थे। जाते समय इस स्थान को जो सालिस राय ने धर्म के नाम पर दान दिया था, पुण्य स्थान (संगत) बनाकर सालिस राय को निगरान बनाया।

श्री गुरु तेग बहादर जी, श्री गुरु नानक देव जी के बाद पहले गुरु थे जिन्होंने पंजाब के बाहर धर्म-प्रचार हेतु यात्रा की। पूर्व की यात्रा के समय गुरु नानक-मिशन का प्रचार करते हुए मई १६६६ ई के आरंभ में वे पटना साहिब आए। उनके साथ गुरु जी के माता, माता नानकी जी, धर्म-पत्नी माता गुजरी जी तथा उनके भ्राता भाई कृपाल चंद जी एवं अन्य दरबारी सिक्ख थे। गुरु जी के कुछ समय बडरी संगत, गायघाट ठहरने के उपरांत उनके परिवार को सालिस राय जौहरी की संगत में एक जुलूस के रूप में लाया गया। उस समय इस संगत का संचालक अधरका का पड़पोता घनश्याम था।

**हिन्दी विभाग, श्री गुरु गोबिंद सिंघ कॉलेज, पटना सिटी-८००००८ (बिहार)*

गुरु जी कुछ दिन ठहरने के बाद परिवार को यहां छोड़कर बंगाल तथा आसाम चले गए। मुंगेर जाकर पटना की संगत के नाम से एक हुक्मनामा जारी किया और परिवार को एक अच्छी हवेली में रखने का आदेश देते हुए संगत को आशीर्वाद दिया। इसी हुक्मनामे में पटना साहिब को (गुरु का घर) कहा है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश इसी पटना साहिब में २३ पौष संवत् १७२३ तदनुसार २२ दिसंबर, १६६६ ई को हुआ था।

श्री गुरु तेग बहादर जी अपनी प्रचार-यात्रा के दौरान उस समय ढाका में थे, जब पटना से बालक गोबिंद राय के जन्म का संदेश उनको मिला। गुरु जी ने अकाल पुरख परमात्मा का धन्यवाद किया तथा निर्धनों एवं ज़रूरतमंदों को दान दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने बचपन के लगभग ७ साल पटना में व्यतीत किये। अपने नन्हें-नन्हें चरण-कमलों की अमिट छाप इस भूमि पर छोड़ गए। पटना में पं शिवदत्त शर्मा, नवाब रहीम बख़्श, करीम बख़्श, पीर अरीफोदीन, सैयद भीखन शाह, राजा फ़तहि चंद मैनी गुरु जी के खास श्रद्धालुओं में थे।

इस पवित्र जन्म-स्थान की इमारत की सेवा-संभाल (मरम्मत) पहली बार स्थानीय राजा फ़तहि चंद मैनी ने संवत् १७२३ में कराई थी, जब गुरु जी का परिवार इस स्थान पर आया था।

मुल्ला अहमद बाबाहनी १८वीं सदी के अंत में पटना आए थे जिन्होंने मिसल उल आहिवाल जहानुमा में तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब के बारे में नीचे लिखे शब्द अंकित किए हैं:-

"गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म-स्थान पर उनके श्रद्धालुओं ने एक शानदार यादगारी इमारत बनायी है, जिसका नाम 'हरिमंदर' रखा है। यह सिक्खों की शक्ति का केन्द्र बन गया है। इसको 'संगत' भी कहा जाता है। सिक्ख कौम के लिए यह सत्कार तथा नम्रता एवं श्रद्धा का प्रतीक है।"

१९३४ ई के भूकंप के कारण इस इमारत में कुछ दरारें आ गई थीं, जिसकी सिक्ख-संगत ने मरम्मत कराके नई इमारत बनाने के लिए सोचा, जिसका परिणाम यह हुआ कि चारों तरफ से इसके लिए दान आने लगा। जन्म-स्थान के नज़दीक वाली आवासीय इमारत को फूलकी स्टेट के राजाओं ने पहले ही बना दिया था जिसका सबूत लगे हुए पत्थरों से मिलता है। इस नई इमारत को बनाने में चीफ खालसा दीवान श्री अमृतसर, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी श्री अमृतसर, अनेक संतों-महापुरुषों तथा संगत का खास तौर से सहयोग मिला। १० नवंबर, १९५४ ई को कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाशोत्सव पर इस पांच-मंजिली इमारत की नींव रखी गई थी। इस काम को शुरू करने की देर थी कि सिक्ख-जगत द्वारा तन-मन-धन से सेवा होने लगी। तीन साल बाद सन् १९५७ ई में २३ पौष को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश दिवस पर इस इमारत का सेवा-कार्य सम्पूर्ण हुआ।

इस पांच-मंजिली इमारत के नीचे तहखाना है। ग्राउंड फ्लोर जन्म-स्थान में श्री गुरु ग्रंथ साहिब, दशम ग्रंथ—गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा श्री गुरु तेग बहादर जी की खड़ाउं है। पहली मंजिल पर अमृत-पान तथा विवाह (आनन्द कारज) करने की व्यवस्था है। चौथी मंजिल पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पुरातन हस्तलिपि और पत्थर के छाप की पुरानी बीड़ को सुरक्षित रखा गया है।

तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब के ऐतिहासिक दर्शनीय स्मृति-चिन्ह

१. श्री गुरु ग्रंथ साहिब (बड़ा स्वरूप), जिन पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने तीर की नोंक से केशर के साथ मूल-मंत्र लिखा था। इनके दर्शन संगत को गुरुपर्व एवं संक्रान्ति के दिन करवाये जाते हैं।

२. छवि साहिब : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज की युवावस्था का तैल-चित्र।

३. पंघूड़ा साहिब (चार पांव का छोटा झूला), जो अभी भी सोने की प्लेटों से मढ़ा हुआ है और जिस पर गुरु जी बचपन में बैठा करते थे।

४. छोटी सैफ : गुरु जी की छोटी कृपाण, जिसे वे बचपन में धारण किया करते थे।

५. गुरु जी के गुलेल की गोली जिससे वे पानी वाले घड़े फोड़ा करते थे।

६. गुरु जी के बचपन के चार तीर जिससे गुरु जी पानी वाले घड़े तोड़ दिया करते थे।

७. गुरु महाराज की लोहे की छोटी चकरी जिसे वे अपने केशों में धारण किया करते थे।

८. लोहे का खंडा, जो गुरु जी दस्तार में सजाया करते थे।

९. गुरु जी का छोटा बघनघा खंजर जो कमरकस्सा में धारण किया करते थे।

१०. गुरु जी का (चंदन की लकड़ी का) कंघा जिससे वे केश संवारा करते थे।

११. गुरु जी के लोहे के दो चक्र जो वे दस्तार में सजाया करते थे।

१२. गुरु जी के लिए हाथी दांत की बनाई खड़ाउं।

१३. श्री गुरु तेग बहादर जी की चंदन की लकड़ी की खड़ाउं का एक जोड़ा।

१४. भक्त कबीर जी की खड्डी, जिससे वे कपड़ा बुनते थे।

१५. श्री गुरु तेग बहादर जी, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा माता सुंदरी जी के हुक्मनामों की एक पुस्तक।

१६. गुरु जी का ३०० साल पुराना चोला (चोगा)।

१७. माता गुजरी जी का कुआं।

१८. एक इंच साइज में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छोटी बीड़।



बाबा दीप सिंघ जी शहीद से सम्बंधित ऐतिहासिक स्थान

*-सिमरजीत सिंघ**

शहीद मिसल के प्रवर्त्तक एवं दमदमी टकसाल के संस्थापक बाबा दीप सिंघ जी का जन्म सन् १६८२ ई. में पिता भाई भगता जी के घर माता जीऊणी की कोख से ज़िला श्री अमृतसर के गांव पहुविंड में हुआ। बाबा जी ने सिक्ख पंथ के विकास के लिए बहुत उद्दम किए व धर्म की खातिर अपने प्राणों की अहुति देकर सिक्ख पंथ के शहीदों में सिरमौर स्थान प्राप्त किया। सिक्ख पंथ में बाबा दीप सिंघ जी के प्रति बहुत श्रद्धा एवं सम्मान है। जिन स्थानों से भी उनका सम्बंध रहा, वहां के लोगों ने उनकी याद को सदैव ताज़ा रखने के लिए उनकी यादगारें बनायी हुई हैं; जहां पर वो समय-समय पर एकत्र होकर अपने महान शहीदों को श्रद्धा सुमन भेंट करते हैं। उनकी बनी यादगारों में से कुछेक का वर्णन यहां पर किया जा रहा है :

जन्म स्थान बाबा दीप सिंघ जी : बाबा दीप सिंघ जी का जन्म स्थान गांव पहुविंड है जोकि श्री अमृतसर से १९ किलोमीटर व झबाल से १६ किलोमीटर तथा भिक्खीविंड से ३ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव के बारे में कहा जाता है कि बाबा पोहू ने यह गांव बसाया था। बाबा पोहू इस गांव से लगभग ३ किलोमीटर की दूरी पर भिक्खीविंड में रहता था। भिक्खीविंड के मुसलमान रंघड़ बाबा पोहू को तंग-परेशान करते रहते थे, जिस कारण वह भिक्खीविंड छोड़कर यहां आ गए, जहां उनके नाम पर गांव पहुविंड स्थापित हो गया। बाबा पोहू की अपनी कोई औलाद नहीं थी। उसके भतीजे दाना, मिर्ज़ा, वसाऊ तथा बिन्ना थे। इन चारों के नाम पर गांव में चार पत्तियां आबाद हुईं। इस समय गांव पहुविंड में बाबे पोहू के संधू ख़ानदान के लगभग १५० घर बसते हैं। इस गांव की आबादी में दूसरी जगह पर खहिरे जट्ट थे, जिनमें से बहुत-से यहां से उठकर २० किलोमीटर की दूरी पर पट्टी के समीप जाकर बस गए। उन्होंने अपने नये बसाए गांव का नाम भी शहीद रखा हुआ है। पहुविंड में अब ३०-३५ घर खहिरे ख़ानदान के हैं जो खुद को शहीद कहलाते हैं। पहुविंड में उनकी पत्ती का नाम भी **'शहीद'** पत्ती है। **'मालवा सिक्ख इतिहास'** के कर्त्ता भाई विसाखा सिंघ तथा स. हुशियार सिंघ दुलेह ने अपनी पुस्तक **'जट्टां दे गोतां दा इतिहासिक वेरवा'** में बाबा दीप सिंघ जी का गांव ज़िला लुधियाना में गुरम बताया गया है। उनके अनुसार बाबा जी के पिता अपने साथियों सहित अला पुर के पठानों से लड़ते हुए शहीद हो गए थे। अला पुर का नाम बदलकर अब लापुर हो गया है। इन शहीदों की यादगारें गांव नए गुरम के पास दक्षिण की तरफ बनी हुई हैं। बाबा दीप सिंघ जी के पिता का कोई सगा भाई न होने के कारण उनकी शहीदी के बाद बाबा दीप सिंघ जी अपनी माता जी के साथ अपने ननिहाल गांव पहुविंड आकर रहने लग गए। जब बाबा जी जवान हो गए तो वापिस अपनी माता जी सहित गांव गुरम चले गए। बाबा जी के माता जी बाबा जी की शहीदी के काफी समय बाद भी इसी गांव में रहते हुए अकाल चलाना कर गए। बाबा जी का जन्म

संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।

स्थान कौन-सा है? चाहे यह शोध का कार्य है परंतु इस बात से सारे विद्वान सहमत हैं कि बाबा जी का सम्बंध पहुविंड गांव से गहन है चाहे यह उनका गांव था या ननिहाल; यहां वह बचपन से जवान अवस्था तक विचरण करते रहे।

गांव पहुविंड पाकिस्तान बनने से पहले ज़िला लाहौर की कसूर तहसील में आता था। आजकल यह ज़िला तरनतारन की पट्टी तहसील में है। गुरुद्वारा जन्म स्थान शहीद बाबा दीप सिंघ की शानदार इमारत इस गांव की शान है। बाबा जी की याद पुराना गुरुद्वारा साहिब मिर्जे की पत्ती में बना हुआ है। गांव निवासियों के अनुसार बाबा जी की याद में नवनिर्मित गुरुद्वारा साहिब का शिलान्यिास १९६९ ई में किया गया तथा इसके निर्माण का कार्य १९८४-८५ तक चलता रहा। १९८३ ई में इस पर स्वर्ण कलश सुशोभित किया गया। इस नए स्थान पर गुरुद्वारा साहिब की ज़मीन पर पहले मुसलमानों की मलकियत थी। पहुविंड में ३०० के लगभग मुसलमानों के घर थे जो १९४७ ई में पाकिस्तान में चले गए तथा यह उनकी ज़मीन लावारिस पड़ी थी। इस खुली ज़मीन पर गांव वालों ने सलाह-मशविरा करके बाबा जी की याद में गुरुद्वारा साहिब बनाकर यहां सन् १९८२ ई में बाबा जी का ३०० वर्षीय जन्म दिवस धूमधाम से मनाया था।

तलवंडी साबो में बाबा दीप सिंघ जी : दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज चमकौर साहिब की जंग के बाद जंगलों के बीचों-बीच होते हुए गांवों में ठहरते हुए तलवंडी साबो पहुंचे तथा इस जगह पर आकर टिक गए व सिक्खों को हुक्मनामें जारी किए, जिस कारण इस जगह का नाम दमदमा साहिब पड़ गया। तलवंडी साबो में आज यहां तख़्त श्री दमदमा साहिब की इमारत बनी हुई है, इस जगह पर गुरु जी दीवान सजाया करते थे। इसी जगह पर माता जी ने साहिबज़ादों की शहीदी का हाल पूछा था। तलवंडी साबो में गुरु साहिब के काफी समय ठहरने के कारण इस जगह के कई स्थान गुरु साहिब की यादों से जुड़े हुए हैं तथा सिक्ख दूर-दूर से आकर गुरु साहिब के दर्शनों हेतु यहां पर आते थे। उच्चकोटि के विद्वान, नाम-अभिलाषी, कुर्बानी के पुंज, धर्मी, शूरवीर, सिक्ख पंथ के जांबाज़ जत्थेदार बाबा दीप सिंघ जी भी इस जगह पर गुरु जी के पास रहने लग गए।

गुरुद्वारा लिखणसर साहिब तलवंडी साबो : दमदमा साहिब रहते हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपूर्णता हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस सरोवर के किनारे बैठकर भाई मनी सिंघ जी से बाणी लिखवाते रहे। गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पहले दर्ज बाणी के साथ अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी को इसी स्थान पर दर्ज करवाया। इस कार्य के लिए बाबा दीप सिंघ जी कलमें बनाकर देने की सेवा करते रहे। लिखाई का कार्य कठिन था। जिसमें अनेकों कलमों, कागज़ व सियाही का प्रयोग होता था। लिखाई करते हुए जिस कलम का मुंह घिस जाता था, गुरु जी दोबारा उसका प्रयोग नहीं थे करते, उनको संभालकर रख लेते थे। लिखाई के कार्य की संपूर्णता के उपरांत इस प्रकार की घिसी हुई कलमें तथा बची हुई सियाही को गुरु जी ने मौजूदा सरोवर में जल प्रवाह कर दिया। इसके साथ ही गुरु जी ने फरमान किया कि यह स्थान गुरु की काशी है अर्थात् दमदमा साहिब गुरमति के ज्ञान का क्षेत्र होगा। जहां गुरमति के प्राबुद्ध विद्वान, लेखक पैदा होंगे। बाबा दीप सिंघ जी ने इस स्थान पर संप्रदायी ज्ञानियों की टकसाल कायम की। गुरु जी के आशीर्वाद का ज़िक्र अनेकों ऐतिहासिक ग्रंथों में मिलता है, जैसे :

इह प्रगट हमारी काशी। पढ़है इहां ढोर मति रासी।

लेखक गुणी कविंद गिआनी। बुधि सिंध है हैं इति आनी।
तिन के कारन कलम घढ देत प्रगट हम डार।
सिख सखा इत पड़ैंगे हमरे कई हजार।
(भाई सुक्खा सिंघ गुरबिलास पातशाही दसवीं, पन्ना ३६१)

आजकल इस स्थान पर गुरुद्वारा लिखणसर साहिब सुशोभित है, जहां अनेकों प्राणी गुरमुखी की वर्णमाला लिखकर विद्या की प्राप्ति हेतु अरदास करते हैं।

अकालसर सरोवर तलवंडी साबो : यह ऐतिहासिक सरोवर तख़्त श्री दमदमा साहिब की इमारत के साथ आठ-कोनों के आकार में है। इस सरोवर में दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी केशों सहित स्नान किया करते थे। प्राचीन समय में इस सरोवर की कार-सेवा बाबा दीप सिंघ जी ने की थी। बाद में बाबा चंदा सिंघ कट्टू वालों ने सरोवर को आठ कोना पक्का करवाया था।

भोरा साहिब बाबा दीप सिंघ जी दमदमा साहिब तलवंडी साबो : तख़्त श्री दमदमा साहिब के साथ ही भोरा साहिब है, जहां बाबा दीप सिंघ जी एकांतवस्था में बैठकर नाम-सिमरन किया करते थे। जहां पर ही बाबा दीप सिंघ जी रिहायश किया करते थे। यह भोरा बाबा दीप सिंघ जी ने खुद बनाया था। इस भोरा साहिब की रूप रेखा विलक्षण किस्म की है जो अपने आपमें इमारत कला का एक उत्तम नमूना है। सुरक्षा के पक्ष में बहुत ही उत्तम है। इसमें बैठे व्यक्तियों की नज़रों से कहीं से भी आने वाला कोई व्यक्ति रह नहीं सकता। इस भोरे के दर्शन करके बाबा दीप सिंघ जी का नाम-सिमरन से प्यार तथा उनके जीवन ढंग के बारे में जाना जा सकता है।

कुआं बाबा दीप सिंघ जी तलवंडी साबो : तलवंडी साबो के क्षेत्र का पानी बहुत खारा (नमकीन) था और पीने योग्य न था। क्षेत्र के लोगों ने बाबा दीप सिंघ जी को इस मुश्किल के बारे में विनती की। लोगों की मुश्किल के समाधान हेतु बाबा दीप सिंघ जी ने अकाल पुरख के समक्ष अरदास कर एक कुआं खुदवाया, जिसका पानी बहुत मीठा निकला। आज भी इस कुएं ने बाबा दीप सिंघ जी की याद को संभाला हुआ है, जिसका पानी पूरे गुरुद्वारा परिसर में प्रयोग किया जाता है। इस कुएं को बाबा दीप सिंघ जी का कुआं कहा जाता है। यह कुआं तख़्त श्री दमदमा साहिब में प्रवेश करते ही दाईं तरफ सुशोभित है, इस कुएं को 'शहीदों वाला कुआं' भी कहा जाता है।

बुर्ज बाबा दीप सिंघ जी तलवंडी साबो : तख़्त श्री दमदमा साहिब जी के साथ एक ऊंचा बुर्ज नज़र पड़ता है। यह भी बाबा दीप सिंघ जी ने बनवाया था। इस बुर्ज से पूरा नगर दिखाई देता है, जिस कारण सुरक्षा के पक्ष से यह बुर्ज बहुत महत्त्व रखता है। गर्मी की ऋतु में यह बुर्ज ठंडी हवा का भी साधन है। बाबा दीप सिंघ जी इस स्थान पर रहकर लिखारियों को गुरमुखी का सुलेख सिखाते थे। यहां पर ही बाबा जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की चार प्रतिलिपियां तैयार कीं। यह बुर्ज गढ़ी के आकार जैसा बना हुआ है जो कि आठ-कोनों के आकार का है। इस बुर्ज की ऊंचाई लगभग ७० फुट है।

गुरुद्वारा बाबा दीप सिंघ जी शहीद सोलखीआं (रोपड़) : गांव सोलखीआं चंडीगढ़-रोपड़ मार्ग पर स्थित है। इस गांव में बाबा दीप सिंघ जी शहीद की आमद की याद में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। प्रो. गंडा सिंघ के अनुसार पंथ के महान जरनैल बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सूबा सरहिंद वज़ीर ख़ान को उसके किए अत्याचारों की सज़ा १७१० ई में सरहिंद पर हमला करके मृत्यु दंड देकर दी। सरहिंद के किले से मुगलई झंडा उतारकर खालसाई झंडा झुला दिए। चप्पड़चिड़ी

के मैदान में बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सूबा सरहिंद से घमासान लड़ाई हुई तो इस युद्ध में बाबा दीप सिंघ जी ने भी अपने जत्थे सहित शमूलियत कर शत्रुओं के ऐसे दांत खट्टे किए कि मुगल फौज को भागने के लिए रास्ता न मिला।

सरहिंद की फ़तहि के बाद बाबा दीप सिंघ जी वापिस जाते समय अपने जत्थे से गांव सोलखीआं में ठहरे थे तथा एक दिन विश्राम किया। इस याद को गांव निवासियों ने अपने दिलों में संभाला हुआ है तथा अपनी आने वाली पीढ़ियों में इस याद को ताज़ा रखने के लिए गुरुद्वारा साहिब सुशोभित किया है।

इस स्थान पर पहले बीयाबान जंगल था। सन् १९६८ ई में इस स्थान पर बाबा दीप सिंघ जी की याद में गुरुद्वारा साहिब का शिलान्यास किया गया। गुरुद्वारा साहिब में श्री गुरु हरिराय साहिब गुरमति विद्यालय भी चलाया जा रहा है। इस स्थान पर फरवरी के माह में बाबा दीप सिंघ जी की शहीदी की याद में वार्षिक समागम करवाया जाता है।

गुरुद्वारा लकीर साहिब तरनतारन : बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी के बाद सिंघों पर जब्र-जुल्म का दौर शुरू हो गया। सिंघ जंगलों-पहाड़ों में चले गए। अहमद शाह अब्दाली ने १७५६-५७ ई में श्री दरबार साहिब पर आक्रमण कर ढह ढेरी कर दिया। पवित्र सरोवर को पाट दिया। इस स्थान पर मुसलमान सिपाहियों ने कब्ज़ा करके आम जनता का आना-जाना बंद कर दिया। इस बात की ख़बर जब बाबा दीप सिंघ जी को जत्थेदार भाग सिंघ से मिली तो उन्होंने श्री हरिमंदर साहिब को मुगल सिपाहियों के हाथों से आज़ाद करवाने हेतु अरदासा सोधा कि अगर इस मंतव्य को पूरा करते हुए शहादत प्राप्त हो तो वह श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में ही हो। बाबा जी की उम्र उस समय ७८ वर्ष की थी। बाबा जी अपने सिंघों सहित तलवंडी साबो से श्री अमृतसर की तरफ चल दिए। ज्ञानी ज्ञान सिंघ ने लिखा है :

अंम्रितसर गुरदुआरे केरी। सुनी बिअदबी सिंघन बथेरी।
पंथ नहीं था सब इस ठौरैं। सन सिंघन पछतावै गौरैं।
मिसल शहीदन का सरदारैं। दीप सिंघ था बडो उदारैं।
रहित दमदमे ढिग तलवंडी। तिसको चंडी अधक सुन चंडी।
सभा मध उन ऐस उचारा। सूरबीर सिंघ को गुर पिआरा।
धरम रखयो चिह जो गुरसुआरा। सो हमरै संग होवै तिआरा।
इस सुन पुन बहु सिंघन बखाना। हेत धरम हम दैहै जाना।
सिंघ जी ख़ुसि हवै पाठ करायो। भोग पाइ कंगना बंधवायो। *(पंथ प्रकाश)*

आपने अपनी जगह भाई नत्था सिंघ को तख़्त श्री दमदमा साहिब की सेवा-संभाल सौंपकर शहीद होने के इरादे से श्री अमृतसर की तरफ कूच कर दिया। उस समय आप जी के साथ सिर्फ पांच सौ सिंघों का जत्था था। रास्ते में लागले गांव से जोगा, दोराज, भुच्चो, गोबिंदपुरा, लक्खी जंगल, बहमान, माहनवाल, कोट, पंजो के, गुरु चौतरां, फूल महिराज से अन्य सिंघ जत्थे में मिलते गए। इस तरह तरनतारन पहुंचने तक आप जी के साथ पांच हज़ार जांबाज़ सिंघों का जत्था बन गया था। तरनतारन साहिब आकर बाबा जी ने जांबाज़ सिंघों को कहा कि वो धर्म हेतु कुर्बान होने जा रहे हैं, अगर किसी को अपनी जान प्यारी है तो वो वापिस चला जाए और जिसने जूझकर शहादत प्राप्त करनी है वही हमारे साथ रहे। इसकी परख के लिए बाबा जी ने एक

लकीर (रेखा) खींचकर कहा कि जिन्होंने शहीदी प्राप्त करनी है वो लकीर फांदे और जिनको अपनी जान प्यारी है वो वापिस चले जाएं। तसल्ली वाली बात थी कि सभी सिंघ लकीर फांद गए। उस स्थान पर बाबा जी की याद में गुरुद्वारा लकीर साहिब सुशोभित है।

गुरुद्वारा ललकार साहिब गोहलवड़ : बाबा दीप सिंघ जी अपने बहादुर योद्धाओं को साथ लेकर इस स्थान पर डट गए। उन्होंने शत्रु फौज को ललकारा (वंगारा) तथा युद्ध करने हेतु आगे बढ़ने को कहा । बाबा जी की इस याद में यहां गुरुद्वारा ललकार साहिब बना हुआ है।

गुरुद्वारा टाहला साहिब : उधर लाहौर के सूबे को भी ख़बर लग गई कि सिक्ख दीवाली के अवसर पर श्री अमृतसर पर एकत्र हो रहे हैं। हाज़ी अताई ख़ान गश्ती फौज लेकर सिक्खों का नामो निशान मिटाने के लिए चक्कर लगा रहा था। श्री अमृतसर पहुंचकर सिक्खों के दबाने का हुक्म हुआ। उधर सूबे ने ढिंढोरा पिटवाकर लाहौर में जहाद का एलान करवा दिया और सभी मोमनों को सामने आने के लिए वंगारा। लाहौर का फौजदार जहान ख़ान दो हज़ार सवार लेकर श्री अमृतसर की ओर चल पड़ा। दोनों दलों का गोहलवड़ के समीप मुकाबला हो गया। सिंघों ने ऐसी बहादुरी दिखाई कि शाही फौज में भगदड़ मच गई परंतु इतनी देर में हाज़ी अताई ख़ान भी फौज़ व तोपें लेकर पहुंच गया। घमासान युद्ध हुआ। सिंघों ने श्री अमृतसर पहुंचने की कोशिश में ऐसी कृपाण चलाई व बहादुरी दिखाई कि छः कोस तक लाशों के अंबार लगा दिए। सारी धरती रक्त से सन गई। गोहलवड़ वाली जगह जहां बाबा दीप सिंघ जी की मुगलों से लड़ाई शुरू हुई, उस स्थान पर गुरु जी की याद में गुरुद्वारा टाहला साहिब सुशोभित है।

गुरुद्वारा शहीद गंज बाबा दीप सिंघ जी, श्री अमृतसर : श्री अमृतसर के बाहर रामसर के पास बाबा दीप सिंघ जी की गर्दन पर तलवार का ज़ब्रदस्त घातक वार हुआ। उनका शीश गिरने ही लगा था कि एक सिंघ ने प्यार से कहा, बाबा जी! आपने तो अरदासा सोधा था कि श्री दरबार साहिब पहुंचकर शहीद होने का परंतु आप तो यहां पर ही फ़तहि बुला चले हैं। यह सुनकर बाबा जी ने शीश को बाएं हाथ से संभाला तथा दाएं हाथ से खंडा चला वैरियों को पार बुलाते हुए श्री दरबार साहिब की ओर चल पड़े। इस जगह पर बाबा जी की बेमिसाल शूरवीरता की ऐतिहासिक याद में श्री अमृतसर के चाटीविंड दरवाज़े के पास गुरुद्वारा रामसर साहिब के पास बाबा दीप सिंघ जी की पावन याद में बना प्रसिद्ध गुरुद्वारा साहिब गुरुद्वारा शहीद गंज बाबा दीप सिंघ जी सुशोभित है। यहां ही बाबा जी के मृत शरीर का अंतिम संस्कार किया गया था। बाबा दीप सिंघ जी की याद में स. जस्सा सिंघ रामगढ़िए ने शहीद गंज की सृजना करवाई थी। बाद में पंथ के महान जरनैल अकाली फूला सिंघ शहीद गंज को यादगारी गुरुद्वारा साहिब के रूप में विकसित किया। इस स्थान का प्रबंध पहले शहीद मिसल के सरदार करते थे। ३१ अक्तूबर १९२४ ई में इस ऐतिहासिक स्थान का प्रबंध सिक्ख पंथ की सिरमोर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के पास आया, जिसने संगत के सहयोग से गुरुद्वारा साहिब को आधुनिक दिशा प्रदान की है।

बुंगा बाबा दीप सिंघ जी, श्री अमृतसर : बाबा दीप सिंघ जी को रोकने के लिए भारी मुगल फौज भेजी गई परंतु सिंघों के जोश के आगे उनकी कोई पेश न गई। श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में पहुंचकर अपना शीश गुरु के चरणों में भेंट कर प्राण त्याग दिए। इस स्थान पर बाबा जी की याद में गुरुद्वारा बुंगा बाबा दीप सिंघ बना हुआ है।

थड़ा साहिब शहीदां, श्री अमृतसर : बाबा दीप सिंघ जी की तरह ही जत्थेदार राम सिंघ वैरियों को मारकर शहीद हो गए, जिनका शहीद गंज रामगढ़ियों के कट्टड़े में है। बाबा सज्जण सिंघ, बाबा बहादर सिंघ तथा कई अन्य सिंघ गुरु के बाग में लड़ते हुए शहीद हो गए, उनका स्थान बाग में है। बाग की जगह पर आजकल दीवान हाल मंजी साहिब बन गया है। इन शहीदों की याद में मंजी साहिब के पास निशान साहिब झुलाया हुआ है, जिसके थड़े के ऊपर निम्नलिखित नाम लिखे हुए हैं :-

१) बाबा दीप सिंघ जी शहीद मुख्य जत्थेदार
२) बाबा बलवंत सिंघ जी शहीद जत्थेदार
३) बाबा हीरा सिंघ जी शहीद जत्थेदार
४) बाबा गंडा सिंघ जी शहीद जत्थेदार
५) बाबा लहिणा सिंघ जी शहीद जत्थेदार
६) बाबा रण सिंघ जी शहीद जत्थेदार
७) बाबा गुपाल सिंघ जी शहीद जत्थेदार
८) बाबा भाग सिंघ जी शहीद जत्थेदार
९) बाबा सज्जण सिंघ जी शहीद जत्थेदार
१०) बाबा बहादर सिंघ जी शहीद जत्थेदार

गुरुद्वारा शहीद बाबा गुरबख़्श सिंघ : जब इस लड़ाई का हाल बाबा गुरबख़्श सिंघ तथा बाबा दरगाह सिंघ ने सुना तो वह उसी समय श्री अनंदपुर साहिब से दो हज़ार सवार लेकर चढ़ आए तथा वैरियों से लोहा लेते हुए श्री अमृतसर पहुंच गए। सिंघों के पवित्र गुरु स्थान श्री हरिमंदर साहिब की इमारत को देखकर बहुत दुख हुआ। उन्होंने रात को छापामारी करके वैरियों के थाने व तहसीलें सब जला दिए। सिंघों के मुकाबले के लिए और मुगल फौज बुलाई गई व सिंघों का नामो निशान मिटाने का आदेश दे दिया। शाह नाज़िम दीन, सर बुलंद ख़ान, जाबर ख़ान, जालम ख़ान आदि फौजदार २० हज़ार लड़ाकू पठानों को लेकर मैदान में आ गए। उधर ९ मार्गशीष, १८१८ बिक्रमी को जत्थेदार गुरबख़्श सिंघ दुश्मनों की चढ़ाई सुनकर धर्म-युद्ध हेतु अरदास करके शहीद होने के लिए तैयार होकर बैठ गए। दिन चढ़ते ही पठानों की भारी फौज श्री अमृतसर पहुंच गई। श्री अमृतसर सरोवर के पीछे बहुत भारी लड़ाई हुई, जिसमें बाबा गुरबख़्श सिंघ, बाबा निहाल सिंघ, बाबा बसंत सिंघ आदि बड़े जत्थेदार शहीद हो गए। दुर्रानियों की फौज पीछे से और आती गई तो सिंघ बसरा के जंगलों में चले गए तथा दुर्रानी मैदान खाली देखकर श्री अमृतसर में खड़दुंम मचाकर वापिस चले गए। श्री अकाल तख़्त साहिब के पीछे बाबा गुरबख़्श सिंघ की याद में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। बाबा निहाल सिंघ जी चुरस्ती अटारी के पास शहीद हुए थे, जिस जगह पर उनकी यादगार बनी हुई है। यह स्थान अब श्री अमृतसर में शहीद गंज के नाम से मशहूर है।

सहायक पुस्तकें

१) भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला।
२) भाई वैसाखा सिंघ, मालवा सिक्ख इतिहास भाग पहिला अते दूजा, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर।
३) स. रूप सिंघ , सो थानु सुहावा, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर
४) होशियार सिंघ दुलेह, जट्टां दे गोतां दा इतिहासक वेरवा, लोक गीत प्रकाशन, चंडीगढ़
५) अमरजीत सिंघ (डॉ.) इतिहास तख़त श्री दमदमा साहिब, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर
६) ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, सिक्ख मिसलां ते घराणे, लाहौर बुक्क शॉप, लुधियाना
७) डॉ. रतन सिंघ जग्गी, सिक्ख पंथ विश्व कोश, भाग पहिला, गुर रतन पब्लिशर, पटियाला
८) पंजाबी विशव कोश, भाषा विभाग, पटियाला।
९) पंजाब कोश, जिलद दूजी, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला।



गुरुद्वारा सुधार लहर एवं चाबियों का मोर्चा

*-स. गुरमेल सिंह 'नियामतपुरी'**

दस गुरु साहिबान ने मनुष्य को ज़िंदगी के हर क्षेत्र में विकास करने के लिए एक नई जीवन-पद्धति प्रदान की, जिसमें उन्होंने मानवता को समानता और स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा दी। श्री गुरु नानक देव जी चाहते थे कि जनता गुलामी और दूसरे बंधनों से आज़ाद हो। गुरु नानक पातशाह का पंथ शुरू से ही सच, प्रेम, आज़ादी और गैरत का रक्षक रहा है। श्री गुरु अरजन देव जी ने शांतमयी नीति अपनाई और अमानवीय कष्ट अपने तन पर सहे कि शायद ज़ालिमों का अमानवीय स्वभाव अपने किए हुए अत्याचारों को देखकर फिर से मानवीय हो जाए। इसके लिए उन्होंने शांति और संयम को शिखर तक बनाए रखा। जब उन्होंने देखा कि ज़ालिम शांतमयी तरीके से नहीं सुधरेंगे तो उन्होंने अपने बेटे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को शस्त्र धारण करने और ज़ालिमों का डटकर मुकाबला करने का आदेश दिया। अत: हथियार उठाना अंतिम रास्ता है जब अन्य सभी तरीके असफल हो जाते हैं। इतिहास के पन्नों में ऐसी बहुत-सी घटनाएं हैं, जिनमें सिक्खों ने शांतिपूर्वक विरोध द्वारा इस बात का सबूत दिया है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, बाबा बंदा सिंघ बहादुर, सिक्ख मिसलों तथा महाराजा रणजीत सिंघ के समय तक जुल्म का सामना करने एवं अधिकार प्राप्त करने के लिए अनेक हथियारबंद लड़ाइयां लड़ी गईं। चाबियों का मोर्चा सिक्ख पंथ के इतिहास में एक ऐसा अद्वितीय महत्त्वपूर्ण संघर्ष है जो शांतमयी ढंग से लड़ा गया और जिसके सामने ब्रिटिश सरकार को अंत में घुटने टेकने ही पड़े थे।

जंगों-युद्धों के दौरान गुरुद्वारों की सेवा-संभाल का काम महंतों के हाथ में आ गया था। आरंभ में तो वे ठीक ढंग से गुरुद्वारों की सेवा-संभाल करते रहे, परन्तु बाद में धीरे-धीरे उन्होंने गुरुद्वारों में सिक्ख सिद्धांतों के उलट काम करने लगे। वे गुरु-घर की गोलकों को निजी स्वार्थों में प्रयोग करने लगे थे अर्थात् वे इनका दुरुपयोग करने लगे थे। परिणामस्वरूप वे बहुत ऐशप्रस्त और कुकर्मी बन गए थे। पंजाब में लगभग २६० गुरुद्वारे महंतों के हाथ में थे। इन महंतों ने अंग्रेजी सरकार की मदद से गुरुद्वारों और उनके नाम लगी सम्पत्ति को अपनी जायदाद बना लिया था। इनमें से बहुत से महंत बहुत नीच और कुकर्मी थे। इनमें प्रत्येक बुरी आदतें थीं। ये महंत पंथ के महान उसूलों का पालन न करते हुए गुरुद्वारों को गुण्डागर्दी के अड्डे बनाए बैठे थे। कुछ समकालीन इतिहासकार कहते हैं कि गुरुद्वारों की ऐसी दुर्दशा देखकर कई सिक्ख लोग वहां जाना पसंद नहीं करते थे।

गुरुद्वारों की ऐसी हालत को देखकर सिक्ख लोग ज्यादा समय तक चुप नहीं बैठ सकते थे। अत: उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी चरण में 'सिंघ सभा लहर', १९०२ ई में एक मुख्य संस्था 'चीफ खालसा दीवान' और १९१९ ई में सिक्खों की एक नई राजनैतिक संस्था "सेंट्रल सिक्ख लीग" बनी। इन संस्थाओं ने क्रमश: सिक्ख धर्म में आई हुई कमियों को दूर करने, गुरुद्वारों के प्रबंध में सुधार करने तथा उन पर केवल पंथ का ही नियंत्रण स्थापित करने के लिए प्रशंसनीय

काम किया।

इस तरह से जब गुरुद्वारों के सुधार की मांग चल रही थी तब कुछ सिक्खों ने ढोंगी महंतों पर मुकद्दमे किये परंतु इन मुकद्दमों का कोई भी फायदा न हुआ। इसलिए सुधारकों ने सोचा कि क्यों न नैतिक दबाव डालकर इन महंतों तथा सरकार से गुरुद्वारों को वापिस लिया जाए! तब इन सिक्ख सुधारकों ने अहिंसावादी तरीके से श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब, बाबे की बेर तथा शेखूपुरा के सच्चा सौदा गुरुद्वारों पर कब्ज़ा कर लिया। सरकार ने शुरू में सिक्खों के द्वारा गुरुद्वारे लेने का विरोध नहीं किया, क्योंकि सरकार यह नहीं चाहती थी कि सिक्ख महात्मा गांधी द्वारा चलाए नए असहयोग आंदोलन में भाग लें। जब सिक्खों ने श्री हरिमंदर साहिब तथा अन्य गुरुद्वारों को वापिस ले लिया था तो उन्होंने इन गुरुद्वारों का प्रबंध भी पंथ के उसूलों के अनुसार करने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब पर १५ नवंबर, १९२० ई को एक मीटिंग की, जिसमें सिक्खों ने एक केंद्रीय कमेटी बनाई, जिसका नाम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी रखा गया। इसके १७५ सदस्य थे। सरकार द्वारा बनाई गई प्रोविज़नल कमेटी के ३६ सदस्य भी इसमें शामिल कर लिये गए।

ब्रिटिश सरकार ने शुरू में शिरोमणि गु: प्र: कमेटी का विरोध नहीं किया, क्योंकि कमेटी के पहले प्रधान स. सुंदर सिंघ मजीठिया सरकार के विरोधी नहीं थे। १४ दिसंबर, १९२० ई में सिक्खों ने दूसरी संस्था 'अकाली दल' का गठन किया, जिसका उद्देश्य गुरुद्वारों को नैतिक दबाव के द्वारा नियंत्रण में लाना था। अकाली दल में कई जत्थे थे। इन जत्थों के सदस्य ज्यादातर छोटे-छोटे किसान होते थे तथा बड़े किसान या जमींदार इनके जत्थेदार होते थे। ये किसान सरकार की आर्थिक नीतियों से भी बहुत ज्यादा दुखी थे। जब सिक्ख नेताओं ने धार्मिक आन्दोलन चलाया तो वे सारे किसान मिलकर सरकार का विरोध करने के लिए इकट्ठे हो गए। इस तरह शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा अकाली दल की अगुआई में गुरुद्वारा सुधार लहर आन्दोलन शुरू हो गया।

सिक्खों ने जल्दी ही कुछ गुरुद्वारों का प्रबंध संभाल लिया। परन्तु जब श्री तरनतारन साहिब के गुरुद्वारे के पुजारियों के साथ समझौते की शर्तों पर विचार हो रही थी तो पुजारियों ने सिक्खों पर छवियों और लाठियों से हमला कर दिया, जिसमें १७ सिक्ख ज़ख्मी हुए तथा २ सिक्ख शहीद हो गए।

सिक्खों को इस बात का पक्का यकीन हो गया था कि जब तक महंतों के प्रति सख़्त नीति नहीं प्रयोग की गई तब तक वे गुरुद्वारों को नहीं छोड़ेंगे। जब २० फरवरी, १९२१ ई को १५० सिक्खों का जत्था सुधार के उद्देश्य के लिए श्री ननकाणा साहिब पहुंचा तो महंत नारायण दास ने सिक्खों के जत्थे पर हमला करवा दिया। इस हमले में सिक्खों को बहुत बेरहमी से कत्ल किया गया। भाई लछमण सिंघ को वृक्ष के साथ बांधकर ज़िन्दा जलाकर शहीद कर दिया गया। इसी तरह बहुत सारे अन्य जीवित घायल सिक्खों पर तेल डालकर आग लगा दी गई।

सरकारी दस्तावेज़ों से यह साफ पता चलता है कि महंत नारायण दास के साथ मिल कर अंग्रेज अधिकारियों ने सिक्खों पर हमला करवाया। सिक्ख जानते थे कि महंत यह सब कुछ अकेला नहीं कर सकता था। श्री ननकाणा साहिब की इस घटना ने सिक्खों में न केवल रोष ही पैदा किया बल्कि उन्होंने गुरुद्वारा एक्ट बनाने तथा सारे गुरुद्वारे पंथ के हाथ में देने की भी मांग की।

सरकार और शिरोमणि कमेटी का टकराव होना स्वाभाविक था। यह टकराव श्री हरिमंदर साहिब के तोशेखाने की चाबियों के प्रश्न को लेकर हो गया। सरकार ने स. सुंदर सिंघ

रामगढ़िया को श्री हरिमंदर साहिब का सरबराह नियुक्त किया हुआ था। सरबराह की हैसियत से वह डिप्टी कमिश्नर श्री अमृतसर का आदेश मानता था। शिरोमणि कमेटी बनने के पश्चात् वह कमेटी का आदेश भी मानने लगा। प्रो. रुचि राम साहनी लिखते हैं कि उसने श्री अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर करैक्क को पत्र लिखा कि सरकार ने उसे सरबराह नियुक्त किया था और पंथ ने उसे कमेटी का सचिव नियुक्त किया है। उसने डी. सी. से राय मांगी कि उसे क्या करना चाहिए, अगर नई कमेटी उससे तोशेखाने की चाबियां मांगती है तो मिस्टर करैक्क ने उसे लिखा कि वह कमेटी की हिदायतों के अनुसार कार्य करे।

पंजाब सरकार ने २० अप्रैल, १९२१ ई को यह एलान किया कि उसने श्री हरिमंदर साहिब का सारा प्रबंध पंथ के हवाले कर दिया है। इस तरह से तोशेखाने की चाबियां कमेटी के पास ही रहीं और सरबराह, कमेटी की हिदायतों के अनुसार ही काम करता रहा।

सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अध्यक्षता से त्याग-पत्र दे दिया और वे पंजाब सरकार की एगजैक्टिव कौंसिल के सदस्य नियुक्त हो गए। उनके स्थान पर स. खड़क सिंघ को अध्यक्ष बनाया गया। उस समय स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के उपाध्यक्ष थे और श्री हरिमंदर साहिब के प्रभारी थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने २९ अक्तूबर, १९२१ ई को यह प्रस्ताव पास किया कि तोशेखाने की चाबियां शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष स. खड़क सिंघ के पास रहें। स. सोहन सिंघ जोश लिखते हैं, "स. खड़क सिंघ अकाली तहरीक के वायुमंडल में पैदा हुई नई बागी स्प्रिट का मन रूप थे। उनकी बोलचाल, तकरीरों के जोश, मूंछों के ताव और चेहरे के जलाल से उस बागी स्प्रिट का प्रदर्शन होता था।" ब्रिटिश सरकार नहीं चाहती थी कि श्री हरिमंदर साहिब का कब्ज़ा उसके हिमायती से विरोधी पक्ष के पास चला जाए और गुरुद्वारों में सबसे बड़ा और सम्मानयोग्य स्थान श्री हरिमंदर साहिब अपनी सारी संचित पूंजी के साथ सिक्खों के कब्ज़े में जाए। इसलिए डिप्टी कमिश्नर ने स्थानीय सरकार के आदेश के अनुसार श्री हरिमंदर साहिब के मैनेजर स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया को हिदायत की कि श्री दरबार साहिब के तोशेखाने और पवित्र यादगारों की कुछ चाबियां सुरक्षित संभाल के लिए उनके हवाले कर दें।

७ नवंबर, १९२१ ई को शाम के ३ बजे लाला अमरनाथ ऐक्सट्रा असिस्टेंट कमिश्नर पुलिस को साथ लेकर श्री हरिमंदर साहिब में आए और स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया से श्री हरिमंदर साहिब के तोशेखाने की चाबियां मांगीं और पूछा कि चाबियां कहां हैं? इस पर स. सुंदर सिंघ ने इशारा करके बता दिया कि चाबियां उस दराज़ में हैं। उन्होंने उसमें से दो थैलियां चाबियों की निकालीं और जाने लगे तो स. सुंदर सिंघ ने रसीद मांगी जिस पर ई. ए. सी. अमरनाथ ने रसीद लिखकर दी, "डिप्टी कमिश्नर के हुक्मों की ताबेदारी करते हुए मैंने आज स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया के पास से ५३ चाबियां वसूल पाई हैं, जो कि तोशाखाना श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की हैं। ये चाबियां मैंने डिप्टी कमिश्नर के हवाले करने के लिए ली हैं।"

सरकार की चाबियां लेने की कार्यवाही से सिक्खों में प्रचण्ड जोश पैदा हो गया। सरकार ने अपने इस कदम को सही बताया और कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी सिक्खों की प्रतिनिधि संस्था नहीं है। सरकार का कहना था कि वह ये चाबियां उस संस्था को देगी जो सही रूप में सिक्खों की प्रतिनिधि संस्था होगी। सरकार का

मानना था कि उसका अभी भी श्री दरबार साहिब पर नियंत्रण है, परन्तु सच तो यह है कि सरकार का उस समय श्री दरबार साहिब पर कोई अधिकार ही नहीं था, क्योंकि जब शिरोमणि कमेटी ने श्री दरबार साहिब का प्रबंध करने के लिए १२ सदस्यों की एक सभा बनाई थी तो सरकार ने कोई हस्तक्षेप नहीं किया था, परन्तु सरकार अब सोचने लगी थी कि शिरोमणि कमेटी अब राष्ट्रवादी लोगों के हाथ में है और वह श्री दरबार साहिब को राष्ट्रवादी गतिविधियों के काम में लाएगी। सरकार ने यह नहीं सोचा कि वह चाबियों को अपने हाथ में लेकर सिक्खों में सरकार-विरोधी भावना को बढ़ा रही थी।

सरकार की चाबियां लेने की कार्यवाही पर सिक्ख समाचार पत्रों का प्रतिक्रम बहुत तीखा और जोशीला था। 'रोज़ाना अकाली' ने लोगों को सरकार की नीतियों से अवगत कराया और सिक्खों को सम्बोधन करके लिखा, "आओ खालसा जी! शांतमयी झंडा हाथ में पकड़कर नौकरशाही की पोल खोलकर जनता के सामने रख दो और विरोध द्वारा दुनिया को बता दो कि हमारे धर्म में खुलम-खुल्ला दख़ल दिया गया है। जगह-जगह पर जलसे करके शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा समाचार पत्रों को नाराज़गी के रैज़ुलेशन भेजो।" 'पंथ सेवक' ने लिखा, "एक विदेशी हकूमत को गुरुद्वारों के मामले में दख़ल देने का क्या हक है? हम देखेंगे कि हमारे धार्मिक खज़ाने पर सरकार कैसे कब्जा करती है!"

पंजाब के सारे लोगों और सिक्खों ने भी बढ़-चढ़कर असहयोग आन्दोलन को अपनाना शुरू कर दिया। इसलिए १० नवंबर, १९२१ ई. को शिरोमणि कमेटी ने श्री अकाल तख़्त साहिब पर प्रस्ताव पास किया कि कौंसिल के सदस्यों ने शिरोमणि कमेटी के गुरमते के अनुसार अगर एक सप्ताह तक अपनी सदस्यता नहीं छोड़ी तो वे तनखाहिए* घोषित कर दिए जाएंगे।

१४ नवंबर, १९२१ ई को सरकार ने कप्तान बहादर सिंघ को श्री दरबार साहिब का सरबराह नियुक्त किया। १५ नवंबर को जब बहादर सिंघ प्रबंध संभालने के लिए आया तो सिक्खों ने उसको प्रबंध संभालने नहीं दिया। श्री अकाल तख़्त साहिब पर गुरमता पास हुआ कि जब तक कप्तान बहादर सिंघ सरकारी सरबराही से त्यागपत्र देकर शिरोमणि कमेटी के द्वारा पंथ से माफी नहीं मांगता तब तक वह पंथ की ओर से तनखाहिया रहेगा। इसलिए २६ नवंबर १९२१ को बहादर सिंघ ने कमेटी को विनती की कि उसने सरबराही से त्यागपत्र दे दिया है और सरकार को चाबियां वापिस लेने के लिए कहा है और वह पंथ से माफी मांगता है। इसके बाद सरकार किसी और सिक्ख को चाबियां देना चाहती थी परंतु कोई भी सिक्ख चाबियां लेने के लिए तैयार न हुआ।

डिप्टी कमिश्नर जगह-जगह पर सिक्खों से सम्बन्धित गलत फहमियां फैलाने लगा। उसने २६ नवंबर को अजनाला में एक दरबार रखा। सिक्खों ने इसके मुकाबले में २६ नवंबर, १९२१ ई के ११ बजे एक आलीशान दीवान लगाने के लिए इश्तिहार लगवा दिए। परन्तु इस दीवान से पहले ही २४ नवंबर को पंजाब सरकार ने लाहौर, श्री अमृतसर, शेखूपुरा आदि ज़िलों में "सैडीशन मीटिंग एक्ट" लागू करने का एलान कर दिया। २६ नवंबर को सरकार द्वारा किए गए जलसे में स. दान सिंघ वछोया तथा स. जसवंत सिंघ झबाल ने भाषण देने की अनुमति मांगी। परंतु डी. सी. के द्वारा अनुमति न दिए जाने पर उन्होंने "कालियों के कुएं" के पास श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करके दीवान शुरू कर दिया। डी. सी. ने स. दान सिंघ वछोया तथा स. जसवंत सिंघ झबाल को पूछा कि क्या यहां पर

**तनखाहिया वह सिक्ख होता है जो खालसा पंथ के नियमों के विरुद्ध कार्य करने पर धर्म-दण्ड का अधिकारी घोषित हो।*

श्री दरबार साहिब की चाबियों के बारे में भाषण होंगे। उन्होंने उत्तर दिया, "हां"। डी. सी. ने स. दान सिंघ वछोया, स. जसवंत सिंघ झबाल, स. तेजा सिंघ समुंद्री, स. हरनाम सिंघ ज़ैलदार और पंडित दीनानाथ ऐडीटर को जलसा रोको कानून के अधीन गिरफ्तार कर लिया।

जब इन गिरफ्तारियों की ख़बर शिरोमणि कमेटी को मिली तो श्री अकाल तख़्त साहिब पर हो रही कमेटी की एकत्रता को स्थगित करके स. खड़क सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, स. महताब सिंघ सचिव शिरोमणि गु: प्र: कमेटी कुछ साथियों के साथ अजनाला पहुंचे। उन्होंने वहां पहुंचकर दीवान लगाया, जिसमें स. खड़क सिंघ, सरदार बहादर स. महताब सिंघ आदि मुखियों ने भाषण दिए। पुलिस ने स. खड़क सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि कमेटी, स. महताब सिंघ सचिव, मास्टर सुंदर सिंघ लायलपुरी, प्रबंधक रोज़ाना अकाली, स. भाग सिंघ, स. गुरचरण सिंघ तथा स. हरी सिंघ जलंधरी को गिरफ्तार किया। गिरफ्तारियों के बाद सरकार ने इन गिरफ्तारियों की पुष्टि के लिए बयान जारी किया, "क्योंकि ज़िला श्री अमृतसर में 'जलसा रोको कानून' लागू हो चुका है और इन्होंने इस हुक्म के उल्ट जलसा करके कानून को भंग किया है।" यह जलसा शिरोमणि कमेटी का दीवान था, परन्तु सरकार ने इसे कांग्रेस का जलसा प्रकट किया, ताकि इसे राजनीतिक जलसा बताकर इस पर आसानी से "जलसा रोको कानून" लागू किया जा सके।

मुखियों की गिरफ्तारी के बाद २७ नवंबर को कमेटी की सभा हुई जिसमें स. अमर सिंघ झबाल को अध्यक्ष तथा कप्तान राम सिंघ को उपाध्यक्ष और स. तारा सिंघ को सचिव चुन लिया गया। इस सभा में कमेटी ने चाबियां लेने, धार्मिक दीवान लगाने तथा गिरफ्तार होने वाले सिक्खों को बधाई देने से सम्बंधित कुछ प्रस्ताव पास किए।

नवंबर के महीने में ही वेल्ज के शहजादे की भारत में यात्रा थी। वह १७ नवंबर को मुम्बई में पहुंचा था। इस समय पर असहयोग आंदोलन भी ज़ोरों पर था। गांधी जी ने उस अवसर पर एक रोष सभा आयोजित की जिसमें विदेशी कपड़े जलाए गए। शिरोमणि कमेटी ने वेल्ज के शहजादे के बायकाट का प्रस्ताव पास किया हुआ था कि सिक्ख उससे सम्बन्धित समारोहों में भाग न लें और पंजाब में उसे न आने दिया जाए। शिरोमणि कमेटी के द्वारा पारित किये बायकाट के प्रस्ताव ने पंजाब सरकार के अधिकारियों को इतना डरा दिया था कि पंजाब में उनके दौरे को रद्द करना पड़ा था।

चाबियों का मोर्चा तेज हो चुका था। रोज़ाना एक दीवान श्री अकाल तख़्त साहिब और दूसरा दीवान गुरू के बाग में लगता था। चाबियों को वापिस लेने और अकाली नेताओं की गिरफ्तारियों से सम्बन्धित बड़े जोश भरे और निधड़क भाषण होते। गांवों से जत्थों के नेता निकल पड़े। उन्होंने अंग्रेजी सरकार की धर्म-स्थानों पर कब्ज़ा जमाए रखने की कुटिल चालों से सिक्ख संगतों को अवगत करवाया।

बुगियाना ज़िला लाहौर में से भाई हरबंस सिंघ और कुछ सिक्ख गुरुद्वारा सच्चा सौदा में स. करतार सिंघ झब्बर के पास अमृत छकने के लिए पहुंचे। स. करतार सिंघ झब्बर ने भाई लाभ सिंघ भिक्खी को बुगियाने में भेजकर अमृत संचार की तैयारी करवाई और वहां पर अमृत-संचार हुआ। अगले दिन दीवान लगा और आसा की वार का कीर्तन हुआ। दीवान को गोरा फौज ने घेर लिया। स. करतार सिंघ झब्बर ने संगतों को चुपचाप कीर्तन सुनने के लिए कहा।

स. झब्बर के भाषण खत्म होने पर डी. सी. फैरर साहिर ने उन्हें बाहर बुलाया। वहां पर

तहसीलदार, पुलिस इंस्पेक्टर, क्षेत्रीय तथा अन्य अफसर भी खड़े थे। डी. सी. ने बड़े गुस्से के साथ स. करतार सिंघ झब्बर से कहा, "देखो सरदार साहिब, यहां जलसे में अंग्रेजों को बंदर और सूअर कहा गया है। हमारी सरकार के खिलाफ बड़ा भारी ऐजीटेशन किया गया है।"

स. करतार सिंघ झब्बर ने डी. सी. को उत्तर दिया, "यह सारी बात गलत है, किसी ने सरकार के विरुद्ध कुछ नहीं कहा और न ही अंग्रेजों को बंदर और सूअर कहा है। हमने तो केवल श्री हरिमंदर साहिब की चाबियां सरकार से वापिस लेने के लिए भाषण दिए हैं और अभी तो प्रस्ताव भी पारित करना है।"

डी. सी. ने अफ्सरों से इसके बारे में पूछा। इंस्पेक्टर ने कहा कि किसी ने भी इस दीवान में ऐसा नहीं कहा, वो तो नगर-कीर्तन के समय एक व्यक्ति ने भाषण देते हुए कहा था। स. झब्बर ने कहा कि उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लो। यह बात सुनकर डी. सी. नरम पड़ गया और स. झब्बर के कहने पर उसने फौज का पहरा हटा दिया। पहरे हटने के बाद स. झब्बर ने एक घंटा फिर चाबियों से सम्बंधित भाषण दिया। डी. सी. ने भाषण सुना और ३५ व्यक्तियों की गिरफ्तारी के आदेश दिए। स. झब्बर को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

२९ नवंबर, १९२१ ई. को पहले गिरफ्तार हुए अकाली आगुओं का मुकद्दमा मिस्टर कॉनर की अदालत में पेश हुआ। स. दान सिंघ, स. जसवंत सिंघ, स. हरनाम सिंघ, स. तेजा सिंघ तथा पंडित दीनानाथ को कॉनर के सामने पेश किया गया। उन्होंने कहा कि उनकी गिरफ्तारी अन्यायपूर्ण तथा गैर-कानूनी है, क्योंकि एक्ट के अनुसार धार्मिक जलसों पर रोक नहीं लगाई गई थी। अगर डी. सी. दरबार या जलसा कर सकता है तो लोग भी कर सकते हैं परंतु मैजिस्ट्रेट ने इस दलील को सही नहीं माना। गिरफ्तार किए हुए सिक्खों ने सरकार से असहयोग किया और अपने पक्ष में कोई भी गवाह पेश नहीं किया। दिसंबर, १९२१ में कॉनर ने इनको सज़ा देते हुए फैसला सुनाया, जिसमें स. हरनाम सिंघ ज़ैलदार को एक हज़ार रुपये जुर्माना तथा ४ महीने की कैद हुई और बाकी साथियों को हज़ार-हज़ार रुपये जुर्माना तथा पांच-पांच महीने की सख़्त कैद की सज़ा सुनाई गई।

इसके पश्चात दिसंबर, १९२१ में कॉनर ने दूसरे जत्थे के गिरफ्तार किए गए नेता स. खड़क सिंघ, सरदार बहादर स. महताब सिंघ, स. भाग सिंघ वकील, स. हरी सिंघ जलंधरी, स. गुरचरण सिंघ वकील और मास्टर सुंदर सिंघ लायलपुरी को जुर्माना छः-छः मास की सज़ा दी गई। जुर्माना न देने की सूरत में छः-छः मास की सज़ा और भी सुनाई गई थी। इस फैसले के बाद मुखियों को जेल में भेज दिया गया।

स. सोहन सिंघ जोश लिखते हैं, "ध्यान देने योग्य और अद्भुत बात यह थी कि चोटी के लीडर अपने आप को गिरफ्तारियों के लिए पेश कर रहे थे और अकाली नौजवान उनकी जगह पूरी कर रहे थे और संभाल रहे थे। लीडरों की गिरफ्तारियों ने आम लोगों को मैदान में उतरने के लिए बड़ा उत्साह दिया।"

कुल १९३ सिक्खों की गिरफ्तारियां हो चुकी थीं। लोगों में सरकार विरोधी जज़्बा ज़ोरों पर था। सरकार के वफ़ादार छुपे हुए थे। लोग हर जगह आन्दोलनकारियों को पनाह देते थे।

आन्दोलन को शान्ति से कुचलने की सरकारी नीति असफल हो चुकी थी। लाला लाजपत राय ने सिक्खों के बारे में लिखा, "लोग ख़्याल करते थे कि सिक्ख स्वतंत्रता के संघर्ष में पीछे रह गए थे और वे सैनिक वर्ग होने के कारण अहिंसा के सिद्धांत को ग्रहण करने में सबसे पीछे होंगे। उन्होंने इन गलत धारणाओं को झूठा सिद्ध कर दिया। आरंभिक पड़ाव में चाहे वे पीछे होंगे परन्तु

इस महत्त्वपूर्ण पल पर वे दूसरों को काफी पीछे छोड़ गए। जहां तक अहिंसा और निजी बलिदान का सम्बंध है, उन्होंने बहुत आश्चर्यजनक प्रमाण १५ नवंबर को ननकाणा साहिब में और बाद में अजनाला तथा श्री अमृतसर में अपने रवैये से दिए हैं। निजी बलिदान, शांति, दिलेरी, तथा उत्तेजना के बावजूद पूर्ण स्वै काबू की जो मिसाल उन्होंने कायम की है, मुश्किल से ही मात की जा सकेगी।"

शिरोमणि कमेटी ने ६ दिसंबर को यह प्रस्ताव पारित किया कि चाबियां वापिस लेने के लिए उस समय तक कोई भी प्रबंध न माना जाए जब तक कि चाबियों के सम्बंध में गिरफ्तार किए गए सारे सिक्खों को बिना शर्त रिहा नहीं किया जाता। सरकार इतने अत्याचार के बाद भी लहर को कुचलने में असफल रही थी। उनको कोई भी सिक्ख चाबियां लेने के लिए नहीं मिल रहा था। सरकार बहुत मुश्किल में फंसी हुई थी। डी. सी. ने ज़िला जज को शिरोमणि कमेटी के पास भेजा, परन्तु शिरोमणि कमेटी ने अस्थाई रूप में चाबियां लेने से इन्कार कर दिया। कमेटी ने यह शर्त लगाई कि पहले सारे कैदी छोड़े जाएं फिर कमेटी के अध्यक्ष स. खड़क सिंघ चाबियां लेंगे।

डी. सी. ने रियासती सदस्यों की कमेटी बनाकर चाबियां वापिस देने की एक योजना बनाई, किंतु इसमें वह असफल रहा। उसने सिक्खों में फूट डालने की बहुत कोशिश की परन्तु सफल न हुआ। ७ दिसंबर, १९२१ ई को उसने उदासियों द्वारा श्री अकाल तख़्त साहिब पर हमला करवाया। उदासियों ने चिमटों और त्रिशूलों से अकालियों को ज़ख़्मी किया। अगर बाहर से लोग सहायता के लिए न पहुंचते तो बहुत भारी जानी नुकसान हो सकता था।

इसके बाद सरकार ने अपने वफ़ादार स. परदुमन सिंघ बेदी को बुलाया, ताकि वह बेदियों को शिरोमणि कमेटी के विरुद्ध भड़का कर चाबियां प्राप्त कर ले, परन्तु स. परदुमन सिंघ असफल होकर चला गया।

गांवों और कसबों में से सिक्ख गिरफ्तारियों के लिए धड़ाधड़ आ रहे थे। मोर्चा ज़ोर पकड़ रहा था। गांवों में बहुत-से सिक्ख लोग काली पगड़ियां बांधकर तथा कृपाण पहनकर अकाली बनते जा रहे थे। स्त्रियां भी काले दुपट्टे लेकर और कृपाण पहनकर जत्थों में शामिल हो रहीं थीं।

आखिर सरकार को झुकना ही पड़ा। ११ जनवरी, १९२२ ई को एलान किया गया कि सरकार ने श्री दरबार साहिब से अपना सम्बंध वापिस लेने का फैसला कर लिया है और वह श्री हरिमंदर साहिब का प्रबंध शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के हाथों में दे रही है। उसने कुछ सिक्ख कैदी छोड़ने का आदेश भी दे दिया।

सरकार ने सिक्ख नेताओं को छोड़ दिया। हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों ने श्री अमृतसर शहर को खूब सजाया और सिक्ख नेताओं का बेमिसाल स्वागत किया गया। १९ जनवरी, १९२२ ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब के सामने बड़ा भारी दीवान लगा। इस दीवान में ज़िला मैजिस्ट्रेट ने आकर स. खड़क सिंघ, अध्यक्ष शिरोमणि गु: प्र: कमेटी को तोशेखाने की चाबियां पेश कीं। संगत से आज्ञा लेकर स. खड़क सिंघ ने चाबियां प्राप्त कीं। यह एक बहुत बड़ी जीत थी।

इस तरह चाबियों का मोर्चा सिक्ख इतिहास की अद्वितीय घटना है, जिसमें सिक्खों ने शांतिपूर्वक अपना अधिकार प्राप्त किया। वे इस लड़ाई में बिना हथियारों के लड़े और अपने इस विद्रोह के द्वारा अपना हक प्राप्त करने में सफल हुए।



दसतार का सम्मान

*-श्री रणवीर सिंह मांदी**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'खालसा' की सृजना करते समय पांच ककारों को धारण करने की परंपरा आरंभ की थी। उनमें एक ककार है केश। केशों की संभाल एवं अन्य हिफ़ाजत के लिए दसतार अनिवार्य होती है। दसतार आदमी की आन-बान-शान है। दसतार न केवल सिक्ख की पहचान करवाती है बल्कि उसके व्यक्तित्व को भी उभारती है। सिक्ख के सम्मान को बरकरार रखने और उसकी धार्मिकता का उद्घोष करने वाली उसकी दसतार ही है।

दसतार का जन्म हज़ारों साल पहले हुआ। स्वतंत्रता संग्राम में ३ मार्च, १९०७ ई को लायलपुर में श्री बांके दयाल का गीत "पगड़ी संभाल जट्टा, पगड़ी संभाल ओए!" शहीदे-आज़म स. भगत सिंघ जैसे क्रांतिकारियों की हौसला-अफ़जाई के लिए कर्म-धर्म बन गया। यह तराना भारत के घर-घर में गूंजकर नौजवानों में नव-रक्त का संचार करने लगा और सरफरोशी की तमन्ना फांसी का फंदा चूमने को मचलने लगी।

विश्व के कोने-कोने में सिक्खों ने अपनी मेहनत, बुद्धि और लगन से प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता सिद्ध करके न केवल विदेशी राज्य के उद्योगों में अपना अहम रोल अदा कर उनकी आर्थिक प्रगति को बुलंदी पर पहुंचाया, बल्कि अपने देश के लिए विदेशी मुद्रा के भी द्वार खोले। पंजाब के सिक्ख सरदारों ने व्यापार, नौकरी-पेशे के लिए विदेशों में जाकर वहां की नागरिकता प्राप्त कर अपनी संस्कृति और धर्म के सूचक भव्य गुरुद्वारों का निर्माण करते हुए अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने में रुचि रखी है। कुछ देशों में पगड़ी को लेकर तनाव फैला हुआ है। इनमें इंग्लैंड और फ्रांस वे देश हैं जिनका भारत के साथ दो-तीन सौ साल पुराना खट्टा-मीठा सम्बंध रहा है। इंग्लैंड ने तो पगड़ी को मान्यता दे दी परंतु फ्रांस अभी इस विषय पर मौन है।

फ्रांसीसी जनरल वेंतूरा और अलार्ड को महाराजा रणजीत सिंघ ने अपनी सेना में उच्च पदों पर नियुक्त किया था। इतना ही नहीं, फ्रांस को प्रभु-सत्ता प्राप्त कराने में (दसतारधारी) सिक्ख सैनिकों ने अपनी जान हथेली पर रखकर अहम रोल अदा किया था। उन फ़र्ज़ों और कर्जों को भुलाकर अब फ्रांस सरकार सिक्ख विद्यार्थियों को स्कूलों-कॉलेजों में पगड़ी बांधकर जाने से मना कर रही है।

फ्रांस सरकार कानून की आड़ तले सिक्खों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रही है। फ्रांस सरकार सिक्ख सैनिकों और उनके परिवारों के बलिदान को भुला बैठी है। ऐसी बेवफाई के लिए किसी ने ठीक ही कहा है :

जब पड़ा वक्त गुलिस्तां पे तो खून हमने दिया,
जब बहार आयी तो कहते हैं, तेरा काम नहीं।



**मु.-पो. मांदी, तहसील नारनौल, ज़िला महेंद्रगढ़ (हरियाणा), फोन : +९१९७२९११९८२२*

आत्म गौरव की रक्षा

*-श्री सुरेंद्र कुमार अग्रवाल**

मानव जीवन अपने आप में एक अमूल्य उपहार हैं। जीवन सर्वोत्तम उत्कृष्टता के साथ जीने से सार्थक व सफल होता है। सब में परमात्मा के स्वरूप के दर्शन कर, मानवता की रक्षा, मानव मूल्यों हेतु हम अपने को सदा आगे रखें। सिक्ख गुरु साहिबान ने अपने व्यक्तिगत सुख व आकांक्षाओं को छोड़कर दूसरों के कल्याण हेतु संघर्ष किया, ज़रूरत पड़ी तो बलिदान देने में भी पीछे नहीं हटे, तभी वे समाज में सर्वोत्तम आदर्श व पूज्य व्यक्तित्व बन गए।

माया का लोभ, भ्रांतियों और रूढ़ियों में जकड़े रहना, रोग-शोक का कारण हैं। हम आत्म सुधार कर अपनी मलीनताओं को दूर कर परिष्कृत व उदार सेवाभावी बनें। आत्म सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है। जो भी अपूर्णताएं हैं, उन्हें अध्यात्म का सहारा लेकर दूर करने का प्रयास करें। जीवन में कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे सिर झुकाना पड़े; कहीं अपमान सहना पड़े या कोई हमारी आलोचना करे। हम सही नीति पर चलते हुए श्रेष्ठ कार्य करें और समाज को ऊंचा उठाने में भरपूर योगदान दें।

हमारा लक्ष्य जन-जन की भलाई होना चाहिए। दूसरों की सेवा सहयोग में हमें भले कुछ कष्ट उठाना पड़े तो उसमें पीछे न रहें। हमारे गुरु साहिबान समाज सेवा में तत्पर रहे, उनका त्याग, बलिदान आज भी हमें दूसरों की सेवा-सहयोग करने की प्रेरणा देता है।

गलत कार्यों से दूर रहें : हम हर स्थिति में अवांछनीय गतिविधियों से बचें। अहंता जन्य ईर्ष्या से बचें, दूसरों की प्रगति देखकर उससे घृणा न करें। कभी भी किसी को नीचे गिराने का प्रयास न करें। हमारा अंत:करण जिस कार्य को करने की अनुमति न दे, वह गलत कार्य न करें। हम प्रतिदिन चिंतन करें, क्या हमसे कोई भूल तो नहीं हुई? आज हमने कोई अपराध तो नहीं किया? हमारे आचरण व्यवहार से किसी को दुख तो नहीं हुआ? लोभ-लालच से कोई कार्य तो नहीं किया? हम किसी का अहित न करें, किसी से बदला लेने की भावना मन में न रखें। अगर हम श्रेष्ठ विचार और भावनाओं से अपने अंत:करण को प्रदीप्त कर सकें तो हमारा जीवन बाहर से भले साधारण दिखे लेकिन हमारी आत्मा परिष्कृत होगी, उसमें परमात्मा की ज्योति अवतरित होगी, जिससे हमें सुख-शांति और आनंद की अनुभूति होगी। लोग हमारे सानिध्य में आकर अपने को धन्य समझेंगे, सुख-शांति महसूस करेंगे।

शरीर और मन की पावनता : हमारा जीवन दर्शन आत्मवादी नहीं परहितवादी होना चाहिए। हम किसी भी स्थिति में दुष्टता, कुकर्म, अपराध, छल-कपट, प्रपंच न करें। निकृष्ट चिंतन से दूर रहें। हमें अपने मस्तिष्क को हमेशा पवित्र रखना चाहिए, उसे किसी भी स्थिति में अपवित्र न होने दें। हमारा मन, विचार और मस्तिष्क परमात्मा की क्रीड़ा स्थली हैं, उसे दुष्ट भावों से बचाये रखें। सदा श्रेष्ठ चिंतन और भावनाओं से अपने मन को पवित्र रखें। शरीर को आत्म

**अग्रवाल न्यूज ऐजेंसी हटा दमोह (म. प्र.) ४७०७७५*

संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करें। श्रेष्ठ विचारों से अपने को सदा शोभायमान बनाये रखें। मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाये रखने के लिए स्वाध्याय (श्रेष्ठ पुस्तकों का अध्ययन), गुरबाणी का पाठ एवं प्रभु-सिमरन से जुड़े रहें।

अपने शरीर, मन और व्यवहार को उज्ज्वल व उत्कृष्ट बनाने में लगे रहे यही प्रभु-सिमरन व ध्यान हैं; जिससे इस शरीर में रहने वाली आत्मा प्रसन्न रहे, आत्म गौरव बढ़ता रहे। शरीर की सफाई के साथ-साथ मन, विचार एवं भावनाओं की सफाई में सतत् लगे रहें। कभी भी श्रेष्ठ कार्यों में, सेवा में दूसरों के सहयोग में आलस्य प्रमाद न करें। आपसी मन-मुटाव भूलकर सब में एक ही परमात्मा का नूर (प्रकाश) है, जानकर सबसे मिल-जुलकर रहें, सबका आदर-सम्मान करें जिससे अपना गौरव बढ़ेगा और आपसी वैर-विरोध का नाश होगा।

समय का सद्उपयोग करें : प्रकृति प्रदत्त सबसे प्रधान संपदा के रूप में जीवन के क्षण (समय) मिले हैं, जिसे व्यर्थ नष्ट न करें। सट्टा-जूआ, शराबखोरी, अपराध, मिलावट और घूसखोरी आदि गलत कार्य से अपने जीवन को पतित होने से दूर रखें। समय रूपी संपदा का सावधानीपूर्वक उपयोग करें। जो व्यक्ति समय का जितना उपयोग करता हैं, वह उतना ही ऊंचा उठता जाता है और सफलता खुद आकर उसके कदम चूमती है और प्रभु भी प्रसन्न होता है।

प्रसन्नतापूर्वक सबका सम्मान करें : सभी से मधुर भाषण, नम्र व्यवहार करना, शिष्टता व शालीनता का व्यवहार करना सभी का आदर करना, चेहरे पर संतोष और उल्लास के साथ एवं सभी का सम्मान करने की कला सीखना ही हमारे सिक्ख सिद्धांतों में मनुष्य मात्र को समझाया गया है।

ईमानदारी से कर्त्तव्यों का निर्वाह करें : हमें हर स्थिति में नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करते हुए अपने परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति जो कर्त्तव्य हैं, उन्हें कर्मठता, वीरता, ईमानदारी से पूर्ण करने चाहिए, सभी कर्त्तव्यों को ईमानदारी से करने से आत्म गौरव बढ़ता है और आत्म स्वाभिमान की रक्षा होती हैं।

हम मर्यादाओं का पालन करें, जो मर्यादा का पालन नहीं कर रहे हैं वे समाज, राष्ट्र व देश में आये दिन नित नई समस्याओं को जन्म दे रहे हैं। नाम-सिमरन, गुरबाणी का पाठ, श्रेष्ठ कर्मों द्वारा हम अपनी पशु प्रवृत्तियों व कुप्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखें। अधिकारों से अधिक अपने कर्त्तव्यों को ईमानदारी से पूर्ण करने हेतु सजग रहें। कभी किसी का धोखे से हक्क न छीने, प्रभु-नाम का आसरा लेकर हमेशा ही ईमानदारी से कार्य करते रहें।

गलत राह न पकड़ें : हमें सदैव अच्छे गुणों को ग्रहण कर सही रास्ते के पथिक बनना चाहिए, कभी भी गलत राह पकड़कर जल्दी सफल होने, ज्यादा धनवान बनने का प्रयास नहीं करना चाहिए। श्री गुरु नानक देव जी ने अमीर के मेवा मिष्ठान की अपेक्षा गरीब की रोटी को ही स्वीकार किया था। वही आदर्श हमारा होना चाहिए। हम न्याय नीति व त्याग के मार्ग पर चलते हुए ईमानदारी व परिश्रम से प्राप्त साधनों का ही उपयोग करें, हर स्थिति में अपने आत्म गौरव की रक्षा करें, ताकि हमें सुख-शांति व संतोष मिल सके। हमारा जीवन ऐसा हो कि हम हर स्थिति में आत्म गौरव दूसरों की भलाई, समय का सदोपयोग, किरत करने, नाम जपने, बांटकर खाने के सिद्धांत को अपने जीवन में चरित्रतार्थ करने का भरसक प्रयत्न करते रहें, तभी हमारा मानवीय जीवन सफल माना जाएगा।



गुरबाणी चिंतनधारा : ९६

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥
सावधान एकागर चीत ॥
सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥
जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥
सरब इछा ता की पूरन होइ ॥
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥
सभ ते ऊच पाए असथानु ॥
बहुरि न होवै आवन जानु ॥
हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥
नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥ (पन्ना २९५)

२४वीं असटपदी की पांचवीं पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने परमेश्वर के सिमरन को सुखों की मणि बतलाते हुए जीवों को सहजता से परमेश्वर के गुणगान हेतु प्रेरित किया है। समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने में सक्षम इस मणि से जीव सर्वोत्म अवस्था की प्राप्ति करके आवागमन से भी मुक्त हो जाता है। बस ज़रूरत है तो एकाग्रचित हो कर सहजता से हम परमेश्वर की बंदगी करते रहें।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे संत मित्र! सावधान तथा एकाग्रचित होकर परमेश्वर की बंदगी करो अर्थात् मनोवृतियों को एकाग्र करके इस मन को एक लक्ष्य पर टिका कर प्रभु की सिफत-सलाह (स्तुति) करो। परमेश्वर की स्तुति अर्थात् परमेश्वर का नाम सहज सुखों की मणि है। जिस हृदय घर में यह नाम रूपी मणि बस जाती है, वह गुणों का भंडार हो जाता है। उसकी समस्त इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं। ऐसा मनुष्य श्रेष्ठ पुरुष हो जाता है तथा समस्त लोगों में उसकी ख्याति (प्रसिद्धि) हो जाती है। वह परम पद को प्राप्त कर लेता है। फिर उसे आवागमन के चक्करों में नहीं पड़ना पड़ता। प्रभु का नाम-धन वही प्राप्त कर सकता है। गुरु पातशाह के कथनानुसार जिसे परमेश्वर से यह बख़्शिश प्राप्त होती है वही नाम रूपी धन कमाकर अपने साथ ले जाता है।

वस्तुत: एक नाम ही ऐसा धन है जो जीव के साथ दरगाह में जा सकता है अन्यथा तो जीव, तन, मन, धन सब कुछ यहीं धरा रह जाता है, जिनको सहेजने में जीव सारी श्वासों की बेशकीमती पूंजी खर्च देता है। लेकिन नाम-धन के बिना सब कुछ व्यर्थ है क्योंकि सब कुछ यहीं रह जाता है।

पांचवी पउड़ी में गुरु साहिब ने जीवों को दिखावे की भक्ति छोड़कर एकाग्रचित होकर प्रभु की बंदगी की प्रेरणा दी है क्योंकि दिखावे के लिए किए गए फोकट कर्मकांडों से प्रभु किंचित भी प्रसन्न नहीं होता। वैसे भी कर्मकांडों की तुलना गुरबाणी में बंजर भूमि से की गई है जैसे उसमें बोए गए बीज और उस पर की गई सारी मेहनत व्यर्थ चली जाती है वैसे ही दिखावे की भक्ति से जीव का कुछ भी संवरने वाला नहीं है। इसलिए गुरु पंचम पातशाह ने इस पउड़ी में सावधान व एकाग्रचित होकर ही परमेश्वर का

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : +९१९९२९७-६२५२३*

सिमरन करने का गूढ़ रहस्य समझाया है; इसी के फलस्वरूप ही लोक-परलोक में जीव के यश (ख्याति) का डंका गूंजेगा। जैसा कि पावन बाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि ॥
जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार ॥
(पन्ना ६७८)

असल में गुरबाणी में अनेक स्थानों पर गुरबाणी (नाम एवं विकारों) में विरोधाभास दिखाया गया है, उस निरंकार का नाम जपने से अभिमान मिट जाता है जैसा कि पावन बाणी का संदेश है :

पाइओ रे परम निधानु मिटिओ है अभिमानु एकै निरंकार नानक मनु लगना ॥(पन्ना ६७८)

वस्तुत: जीवन में विचरण करते हुए भी मार्ग में जहां कहीं एकाग्रता या सावधानता नहीं रहती वहां दुर्घटना घटते देर नहीं लगती, ठीक वैसे ही पांच विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जो हर समय जीव के इर्द-गिर्द रहते हैं और जैसे ही ईश्वर नाम से या उसकी मौजूदगी के विश्वास से हमारा मन भटकता है तो इन पांचों विकारों में से कोई न कोई हम पर हमला कर देता है। इसलिए गुरबाणी में बड़ा सुंदर समझाया है तथा जीव को आठ पहर सुचेत एवं सावधान रहने को प्रेरित किया गया है कि विकार तो पांच और यह जीवात्मा अकेली, इससे आध्यात्मिक गुणों को कैसे बचाया जा सकता है? यथा बाणी प्रमाण :

अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥
मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥ (पन्ना १५५)

अत: स्पष्ट है सावधान और एकाग्रचित होकर प्रभु की बंदगी करें ताकि इन विकारों से बचा जा सके तथा जीवन मनोरथ सफल हो सके।

खेम सांति रिधि नव निधि ॥
बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥
बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥
गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥
चारि पदारथ कमल प्रगास ॥
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥
समदरसी एक द्रिसटेता ॥
इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥
(पन्ना २९६)

छठी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने श्रवण के महत्त्व को स्पष्ट किया है कि किस प्रकार गुरु उपदेश को सुनने वाला परम तत्व का ज्ञाता होकर भी वह सदा निर्लेप भाव से विचरण करता है।

गुरु पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि क्षेम-शांत अर्थात् निश्चित एवं अटल सुख-शांति सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। (यहीं नहीं) श्रेष्ठ बुद्धि, संपूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। विद्या, तप, योग, परमेश्वर का ध्यान प्राप्त हो जाता है, श्रेष्ठ ज्ञान, उत्तम स्नान (सर्वोत्म तीर्थों का स्नान) प्राप्त होता है (इसके अतिरिक्त) (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष) चार पुरुषार्थ प्राप्त हो जाते हैं। हृदय कमल की तरह खिला रहता है। वह सबमें रहता हुआ भी निर्लेप भाव से विचरण करता है अर्थात् समस्त पदार्थ उसे किसी तरह से जीवन साधना में विचलित नहीं कर सकते। (ऐसा जीव) सुंदर सूझवान परम तत्व का ज्ञाता बन जाता है। वह समदर्शी अर्थात् सबको एक सी दृष्टि (नज़र) से

देखने वाला अर्थात् उसे सर्वत्र में ईश्वर दिखाई देने लगता है। उपरोक्त सारे फल उस व्यक्ति में आ जाते हैं। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में इस गूढ़ रहस्य को प्रकट करते हैं कि जो गुरु के वचन तथा परमेश्वर का नाम मुख से उच्चारण करता है तथा हृदय से सुनता है।

उपरोक्त पउड़ी में भी पांचवीं पउड़ी जैसे भावों को विस्तारपूर्वक बयान किया गया है कि किस प्रकार पूर्ण गुरु के उपदेशानुसार जो प्राणी नाम का अभ्यास करता है अर्थात् जीवन में उतारता है वह पूर्ण ज्ञानी उच्चावस्था प्राप्त कर लेता है। वह अंदर बाहर से निर्मल व पवित्र हो जाता है। पूर्ण शांति एवं सकून को प्राप्त कर लेता है। चार पदार्थों की सहज ही प्राप्ति हो जाती है, तत्ववेता होकर द्वैत भाव से दूर हो जाता है तथा कण-कण में तथा प्रत्येक जीव में परम-ज्योति पारब्रह्म परमेश्वर के दीदार करता हुआ अपने-पराये के भेद से पूर्णतया मुक्त होकर परम पद का अधिकारी बन जाता है।

वस्तुत: गुरु पातशाह ने सुखमनी साहिब की तीसरी असटपदी में जिन अवस्थाओं एवं पदार्थों की प्राप्ति हेतु कुछ शर्तें रखी जैसे अगर कोई चार पदार्थों की प्राप्ति करना चाहता है तो संत जनों की सेवा में लग जाए और अगर अपने दुखों से समूल मुक्ति चाहता है तो प्रभु का नाम सदैव हृदय में जपता रहे। अगर अपनी शोभा चाहता है तो साधसंगत में आकर हउमै को पूर्णतया त्याग दे आदि अगर हम ध्यानपूर्वक चौबीसवीं असटपदी की छठी पउड़ी में देखें तो उन समस्त पदार्थों, पदों की प्राप्ति किस प्रकार सतिगुरु के उपदेश को श्रवण करने पावन बाणी को पढ़ने से और उपदेश (बचन की कमाई) अर्थात् अमल मे लाने से कितनी सहज हो गई। समस्त सुखों के खज़ाने वचन की कमाई करने वाले श्रेष्ठ जन को सहजता से नसीब हो गए प्रतीत होते हैं। ज़रूरत है तो बस इस पावन बाणी को पढ़-सुनकर हृदय में बसाने की, जिसकी बदौलत समस्त दुख क्लेश दूर हो जाते हैं। हृदय घर में सुख-शांति तथा आनंद का प्रवेश तथा ठिकाना हो जाता है, इस तरह का निर्मल उपदेश जपु जी साहिब की बाणी में गुरु नानक पातशाह जी ने भी दिया है यथा :

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ (पन्ना २)

सतिगुरु रहमत करे और हम भी अति प्यार एवं श्रद्धा भावना से धुर की बाणी का गायन एवं श्रवण करें ताकि सहजता से यह अमृतमयी बाणी हमारे हृदय घर में बसनी शुरू हो जाए और हमारा लोक-परलोक संवर जाए।

इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥
सभ जुग महि ता की गति होइ ॥
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥
सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥
सगल मतांत केवल हरि नाम ॥
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥
कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥
संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥
जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥
साध सरणि नानक ते आए ॥७॥

२४वीं असटपदी की सातवीं पउड़ी में पंचम पातशाह जी ने जहां एक ओर प्रभु-नाम की महिमा का बखान किया है वहीं साथ ही साधसंगत के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए इस गूढ़ तथ्य को समझाया है कि सत्संगत की प्राप्ति ईश्वर द्वारा लिखित शुभ लेखों से ही संभव हैं। गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हृदय जो भी मनुष्य इस नाम रूपी खज़ाने का जाप करता है। हर

युग में उस मनुष्य की आत्मिक अवस्था अत्यंत ऊंची बनी रहती है अर्थात् जिस भी युग में जीव ने ईश्वर की आराधना की उसकी आत्मिक अवस्था ऊंची रहती और वह जीवन मुक्त हो गया अर्थात् उसने जीते जी मुक्ति पा ली। नाम रूपी बाणी ही ईश्वर की बंदगी है। प्रभु-नाम का ठिकाना भक्तों के मन में ही है अर्थात् प्रभु-भक्तों के हृदय में ही प्रभु-नाम बसता है। साधु जनों की संगत में आकर करोड़ों पाप मिट जाते हैं। संत जनों (पूर्ण गुरु) की रहमत से जीव यमदूतों से बच जाता है अर्थात् उसे मौत का डर भी नहीं रह जाता गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में फरमान करते हैं कि वही मनुष्य ही पूर्ण गुरु की शरण में आता है। समूची श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में नाम की महिमा का गुणगान किया गया है, सुखमनी साहिब की बाणी में भी गुरु साहिब ने समस्त ईश्वर प्राप्ति के साधनों में से प्रभु के सिमरन को सर्वोत्तम माना है। पहली असटपदी में ही *"प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥"* कथन करके गुरु साहिब पंचम पातशाह जी ने कलयुगी जीवों को प्रभु सिमरन हेतु प्रेरित किया है।

इस पउड़ी में भी गुरु साहिब ने समस्त धर्मों-ग्रंथों मतों-मतांतरों का मूल सिद्धांत नाम सिमरन को ही माना है। नाम-सिमरन की बदौलत कोटिश पापों-क्लेशों का नाश हो जाता है।

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने तो नाम को सर्वोत्तम दात के साथ अक्षय भंडार कथन किया है, गुरु पातशाह जी की बाणी में भी उपरोक्त भाव के दर्शन होते हैं :

नावै जेवड होर दाति नाही तिसु रूपु न रिखिआ ॥
नामु अखुटु निधानु है गुरमुखि मनि वसिआ ॥
करि किरपा नामु देवसी फिरि लेखु न लिखिआ ॥
(पन्ना ७८७)

वस्तुतः नाम-प्रभु का मिलता भी उसी की रहमत से है। वाहिगुरु रहमत करें और कोई किनका नाम का हमारे हृदय में भी बस जाये।

जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥
दुलभ देह ततकाल उधारै ॥
निरमल सोभा अंम्रित ता की बानी ॥
एकु नामु मन माहि समानी ॥
दूख रोग बिनसे भै भरम ॥
साध नाम निरमल ता के करम ॥
सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥
नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥
(पन्ना २९६)

चौबीसवीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बाणी की महिमा को बयान करते हुए पावन फरमान करते हैं कि जो भी इस पावन बाणी को श्रद्धा भावना, प्रेम-भाव से पढ़ता अथवा सुनता है उसे हर पल परमेश्वर स्मरण रहता है। दुखों-क्लेशों की निवृत्ति हो जाती है, आवागमन के कष्टों का निवारण हो जाता है। उसके नाम से ही साधु पुरुष प्रसिद्ध हो जाता है। उसकी शोभा सबसे ऊंची हो जाती है। इन्हीं गुणों के कारण प्रभु की बाणी का नाम सुखों की मणि अर्थात् सर्वोत्तम सुख माना गया है।

गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिस हृदय घर में परमेश्वर का नाम बस जाता है तथा जो प्रेमपूर्वक प्रभु-नाम श्रवण करता है। उसे प्रभु सदैव याद आता है अर्थात् उसकी स्मृति में अकाल पुरख बस जाता है। ऐसे जीव का जन्म-मृत्यु का दुख निवृत्त हो जाता

है। उसके दुर्लभ मानव शरीर का तत्काल उद्धार हो जाता है। उसकी निर्मल ख्याति (शोभा) सर्वत्र फैल जाती है तथा उसकी बाणी अमृत तुल्य मीठी हो जाती है। एक परमेश्वर का नाम उसके हृदय घर में समाया रहता है। उसके दुख, रोग, भय एवं भ्रम (वहम) पूर्णतया विनिष्ट हो जाते हैं। उसे पूर्ण साधु वाली अवस्था प्राप्त हो जाती है और उसकी करनी सर्वोत्तम अर्थात् उसके कर्म निर्मल हो जाते हैं। उसकी शोभा सबसे ऊंची होती है अर्थात् लोक-परलोक में उसकी उपमा होती है। गुरु पातशाह धन्य-धन्य श्री गुरु अरजन देव जी स्पष्ट करते हैं कि उपरोक्त गुणों के कारण इस बाणी का नाम सुखमनी है अर्थात् यह बाणी सुखों की मणि है, सुखों की खान है, सर्वोत्तम सुख प्रदान करने वाली है।

वस्तुत: प्रेम एवं श्रद्धा भावना से प्रभु-नाम पढ़ने एवं सुनने वालों के हृदय घर में प्रभु-परमेश्वर स्वयं ही विराजमान रहते हैं और जहां परमेश्वर का वास होगा वहां दुख-क्लेश का डेरा नहीं हो सकता। स्पष्ट है प्रभु-नाम की बरकतों से मानव जीवन सफल होता है, आवागमन के क्लेशों से निवृत्ति हो जाती है और ऐसा मनुष्य ब्रह्मज्ञानी की सर्वोत्तम अवस्था को प्राप्त कर लेता है और इसी रूप में उसकी शोभा सर्वत्र फैल जाती है। प्रभु मिलाप का सौभाग्य प्राप्त होता है और ये सारी बरकतें उस प्रभु-नाम की हैं, पावन बाणी की हैं यथा नाम तथा गुण की उक्ति यहां पूर्णतया चरितार्थ होती है।

समूचे सुख प्रदान करने वाली यह अमृतमयी बाणी सचमुच सुखों की खान है यह आध्यात्मिक रचना जीवन के प्रत्येक धरातल को छूती है बेशक दुनिया का प्रत्येक जीव सुख चाहता है और दुखों-क्लेशों से मुक्ति चाहता है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी जिन्हें बाणी के बोहिथ (जहाज़) कहा जाता है ऐसी अमृतमयी बाणी की रचना करके उन्होंने कलयुगी जीवों पर जो उपकार किया है, उसे शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। इस पावन बाणी में सर्वत्र नाम की महिमा का गायन करते हुए गुरु पातशाह ने प्रभु-सिमरन को सर्वोत्तम मानते हुए उसकी बख़्शिशों से प्राप्त हर चीज़ के लिए उस प्रभु का शुक्राना करने का पावन निर्देश दिया है, जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझाया ब्रह्मज्ञानी के लक्षण और ब्रह्मज्ञानी की उच्चावस्था प्राप्त करने की कला भी सिखाई है। *"सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥"* अर्थात् सब धर्मों में से श्रेष्ठ धर्म है प्रभु की बंदगी तथा शुभ कर्म करना। क्योंकि जहां जीव की करनी निर्मल होगी वहां हृदय घर पवित्र होगा और जहां हृदय पवित्र होगा वहीं ईश्वर का सदीवी निवास होगा। ऐसी निर्मल करनी कि हृदय घर ही "प्रभु का घर" बन जाए। विकारों का समूल नाश हो जाए जैसा कि पावन बाणी का निर्मल संदेश है :

खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥
नानक द्रिसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥
(पन्ना २६०)

ऐसी ऊंची अवस्था प्राप्त हो जाए और हृदय घर से यही ध्वनि गूंजती रहे जैसा कि गुरबाणी में समझाया है :

सफल मूरतु सफल ओह घरी ॥
जितु रसना उचरै हरि हरी ॥२॥
सफलु ओहु माथा संत नमसकारसि ॥
चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ॥३॥
कहु नानक भला मेरा करम ॥

जितु भेटे साधू के चरन ॥४॥ (पन्ना १९१)

सुखमनी साहिब जी की बाणी हमें श्वास-ग्राम नाम जपने की प्रेरणा देती है। साथ ही यह भी हिदायत है यह सब तभी मुमकिन है जिस पर उस मालिक की रहमत है, कृपा दृष्टि है जैसा कि पावन बाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं :

नित जपीऐ सासि गिरासि नाउ परवदिगार दा ॥
जिस नो करे रहंम तिसु न विसारदा ॥
(पन्ना ५१८)

अत: उसकी रहमत के पात्र बनने हेतु भी बार-बार उस पारब्रह्म परमेश्वर के चरणों में जीव को विनती करने की युक्ति भी इस पावन बाणी में सिखलाई गई है। अत: यह पावन एवं निर्मल बाणी सुखों की खान है, भक्त-जनों के हृदय में सदीवी इसका ठिकाना है।

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ (पन्ना २६२)

आओ! हृदय की गहराइयों से अकाल पुरख रहमतों के सागर वाहिगुरु के पावन चरणों में अरदास करें कि इस कलयुगी पसारे में आप ही कृपा करो और अपनी दया दृष्टि से कोई किनका नाम का, विनम्रता का गुरबाणी आशय प्रेम भाव का, विश्वास दया, धर्म सब्र-संतोष का, इन्सानियत का हमारी झोलियों में डाल दो जिसकी बदौलत लोक-परलोक सुहेला हो जाए।

कविता

दर्शन सतिगुर का

*-तुली फकीर चन्द जालंधरी**

लक्ख खुशियां बरसाए, दर्शन सतिगुर का।
जो मांगे सो ठाकुर देवे, जो नानक सतिगुर को सेवे,
दामन भरता जाए, दर्शन सतिगुर का।
भारत की सूखी फसलों को, गुरू नानक लहराया,
इस दर्शन से नागों ने भी, करी सीस पे छाया,
सोये भाग जगाए, दर्शन सतिगुर का।
दामन भरता जाए, दर्शन सतिगुर का।
भारत था सोया और उसकी सोई थी तकदीरें,
भारत माता के पाँवों में, पड़ी थीं जब ज़ंजीरें,
ज़ंजीरों को तोड़ दिखाया, जब बाबर को सच सुनाया,
सच की बाणी गाए, दर्शन सतिगुर का।
दामन भरता जाए, दर्शन सतगुर का।
आओ इस दरबार से, आत्म-मन की भक्ति ले लो,
नानक की बाणी से अपने, मन की शक्ति ले लो,
गुर के दर्शन अपर-अपारा, कल्प-वृक्ष है गुरुद्वारा,
किस्मत को पलटाए, दर्शन सतिगुर का।
दामन भरता जाए, दर्शन सतिगुर का।

**५, रमेश कॉलोनी, एस. डी. वोमेन कॉलेज मार्ग, जालंधर। मो: ९८१५८-८८०५८*

ख़बरनामा

धर्म प्रचार कमेटी द्वारा ली गई धार्मिक परीक्षा में बैठे एक लाख से अधिक विद्यार्थी

श्री अमृतसर : १ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खों की प्रतिनिध धार्मिक संस्था होने के नाते अपनी धर्म प्रचार हेतु जिम्मेदारी को बाखूबी निभा रही है। इस आशय अनुसार नवयुवकों को धार्मिक और नैतिक सरोकारों के साथ जोड़ने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी हमेशा प्रयत्नशील रही है और इसके धार्मिक विंग धर्म प्रचार कमेटी की गतिविधियां सिक्ख धर्म के प्रचार की नयी योजनाबंदी की तरफ निरंतर प्रयासरत रहती हैं। इन शब्दों का प्रकटावा जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने किया।

प्रेस विज्ञाप्ति में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अधिरिक्त सचिव स. दिलजीत सिंघ बेदी ने कहा कि धर्म प्रचार कमेटी की भूमिका सदैव सार्थक रही है और दिन प्रतिदिन चढ़दी कला इसके परिणाम है इस सम्बंध में उन्होंने धर्म प्रचार कमेटी द्वारा आज समाप्त हुई धार्मिक परीक्षा का ज़िक्र करते कहा कि स्कूली विद्यार्थियों को सिक्ख इतिहास, सिक्ख सिद्धांतों व सिक्ख रहित मर्यादा के साथ जोड़ने के लिए धार्मिक परीक्षा का विशेष स्थान है। उन्होंने कहा कि लंबे समय से चल रही धार्मिक परीक्षा द्वारा अब तक लाखों ही विद्यार्थियों को सिक्खी के मूल्यवान सिक्ख सिद्धांतों और गुरबाणी के साथ जोड़ा जा चुका है। उन्होंने बताया कि इस बार धार्मिक परीक्षा में एक लाख से अधिक विद्यार्थियों का दाख़िला इस बात का गवाह है कि नवयुवक अपने धर्म की जानकारी प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रखते हैं। उन्होंने धर्म प्रचार कमेटी के प्रचारकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि धर्म प्रचार के प्रति आज तक प्रचारकों को जो भी टीचा दिया गया है, इससे कहीं ज्यादा परिणाम इन्होंने दिए हैं। उन्होंने कहा कि धार्मिक परीक्षा में उपस्थित हुए एक लाख से अधिक बच्चे अधिकारियों और प्रचारकों के कड़े परिश्रम का परिणाम है।

उन्होंने सिक्ख माता-पिता को बच्चों के अंदर धार्मिक भावनाओं का संचार करने हेतु आगे आने को आवश्यक करार देते कहा कि बच्चों की शख़्सियत के सम्पूर्ण विकास हेतु व्यवहारिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक गुणों, की भी बहुत महानता होती है और इस सुमेल के लिए माता-पिता को प्राथमिकता करनी चाहिए। अपने बच्चों को अगर माता-पिता धार्मिक रीति रिवाज़ और नैतिक मूल्यों के साथ जोड़ने के लिए प्रयत्न करेंगे तो बच्चे अवश्य ही सभय बनेंगे। उन्होंने माता-पिता से निवेदन करते हुए कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा धार्मिक परीक्षा और सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स नवयुवकों के भीतर धार्मिक और नैतिक शिक्षा का संचार करने के लिए ही चलाए जा रहे हैं, जिसका अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए माता-पिता अपने बच्चों को प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि धार्मिक परीक्षा से पुजीशन प्राप्त करने वाले बच्चों को हौसला अफ़जाई के लिए लाखों रुपए का वज़ीफा राषि भी दी जाती है।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी अपने प्रबंध वाले स्कूलों में गुरबाणी मुकाबले करवाएगी : मनजीत सिंघ

श्री अमृतसर : १ दिसंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की अगुआई

में गुरुद्वारा कलगीधर निवास सेक्टर-२७ चंडीगढ़ में हुई कार्यकारिणी की एकत्रिता में फैसला लिया गया है कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी अपने प्रबंध वाले स्कूलों में बच्चों के गुरबाणी कंठस्थ मुकाबले करवाएगी तथा बाद में दूसरे स्कूलों में भी बच्चों को गुरमति के साथ जोड़ने के लिए मुकाबले करवाए जाएंगे।

यहां से प्रेस विज्ञप्ति में स. मनजीत सिंघ, सचिव, धर्म प्रचार कमेटी ने जानकारी देते हुए कहा कि अध्यक्ष साहिब की इच्छा अनुसार बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ सिक्खी के साथ जोड़ने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा अपने प्रबंध वाले समूह स्कूलों में शुद्ध गुरबाणी कंठस्थ उच्चारण, सिक्ख रहित मर्यादा तथा सिक्ख इतिहास की जानकारी सम्बंधी मुकाबले करवाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि जो बच्चे इन मुकाबलों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान ग्रहण करेंगे, उनको धर्म प्रचार कमेटी द्वारा ईनाम दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि समय-समय इस तरह के मुकाबले करवाने से जहां बच्चों को गुरमति का ज्ञान प्राप्त होता है वहां वो एक अच्छी शख़्सियत व रहन-सहन हासिल करते हुए इधर-उधर भटकने की जगह गुरु साहिब के चरणों में लगते हैं। उन्होंने कहा कि इसके अगले पड़ाव में पंजाब के अन्य स्कूलों से भी धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से अपने प्रचारकों द्वारा स्कूल प्रबंधकों के सहयोग से ये मुकाबले करवाएं जाएंगे। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी धर्म प्रचार कमेटी द्वारा स्कूलों में मुकाबले करवाए गए थे, जिसके अच्छे परिणाम हमारे समक्ष हैं।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कनाडा सरकार में दो पंजाबियों को पार्लियामेंट सचिव बनाने पर मुबारकबाद दी

श्री अमृतसर : ४ दिसंबर: जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने कनाडा के प्रधानमंत्री जसटिस टरूडो द्वारा अपने मंत्री मंडल से ३५ पार्लीमानी सचिवों में दो पंजाबियों को शामिल करने पर मुबारकबाद दी है।

यहां से प्रेस विज्ञप्ति में उन्होंने कहा कि आज सिक्ख ग्लोबल स्तर पर अपनी मेहनत सदका पंजाब व पंजाबियत का पूरी दुनिया में नाम रोशन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कनाडा की टरूडो सरकार द्वारा पहले सिक्ख स. हरजीत सिंघ सज्जण को रक्षा मंत्री तथा अब दो पंजाबनों कमल खहिरा तथा अंजू ढिल्लों को बिना किसी भेदभाव के पार्लीमानी सचिव नामज़द करने से समूचे सिक्ख भाईचारे का सिर फ़क्र से ऊंचा हो गया है।

उन्होंने कहा कि सिक्खों की कड़ी मेहनत तथा लगन ने दुनिया में इनके अक्स को बड़े पैमाने पर उभारा है। उन्होंने कहा कि यह सब गुरु साहिबान की बख़्शिश के सदका ही संभव हो सकता है कि भारत के छोटे-से क्षेत्र से उभरी यह कौम विश्व के नक़्शे पर प्रवान की गई है तथा अपनी मेहनत सदका बड़ी-बड़ी पदवियों पर विराजमान हो रही है। उन्होंने इस सम्बंधी कनाडा की टरूडो सरकार का विशेष रूप में धन्यवाद किया तथा पंजाब व देश-विदेश में बसते समूचे सिक्ख भाईचारे को मुबारकबाद दी है।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दिलजीत सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०१-२०१६